स्वर मंजरी

मुनि स्वस्तिक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

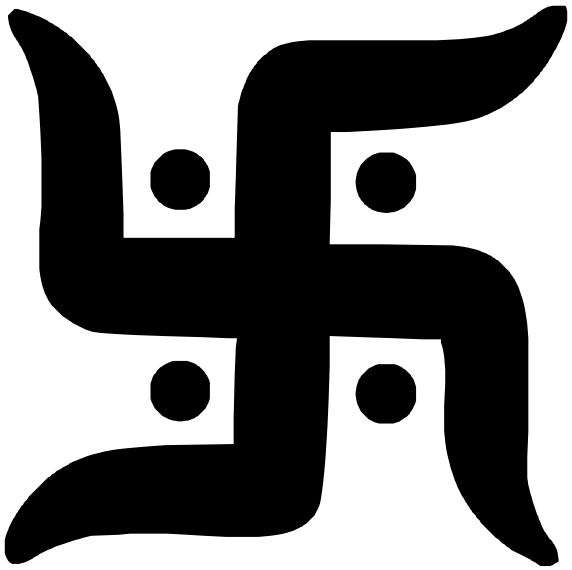

स्वर मंजरी

मुनि स्वस्तिक

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं–341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080, 224671
ई–मेल : books@jvbharati.org

Books are available online at
https://books.jvbharati.org

ISBN No. : 978-81-939051-3-5

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2018 (1000 प्रतियां)

मूल्य : अस्सी रुपये मात्र

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

SWAR MANJARI - By Muni Swastik ₹ 80/-

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

भावाभिव्यक्ति की एक सरस माध्यम है गीत। उसके माध्यम से और आदमी भावविभोर भी बन सकता है।

मुनि स्वस्तिककुमारजी हमारे धर्मसंघ के युवासंत हैं। वे खूब अच्छा विकास करते हुए धर्मसंघ की खूब अच्छी सेवा करते रहें। 'स्वर मंजरी' पाठक, श्रोता और गायक के भीतर अध्यात्मं का स्वर गुंजायमान करने मे सक्षम बने, शुभाशंसा।

रासगढ़ा, ओडिशा

आचार्य महाश्रमण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भूमिका

सुख और शांति हमारे भीतर है पर हर कोई इसका आनन्द नहीं ले पाता है। जो हमारे भीतर है उसे बाहर खोजने का प्रयास किया जाता है। बाहर सुख का आभास है अन्दर आत्मानुभूति का आनन्द है। आनन्द ही समाधि है और समाधि ही सुख है।

सुख के स्रोत को प्राप्त करने के अनेक साधन है उनमें एक साधन है– **संगीत**। संगीत रस में डूबा हुआ व्यक्ति भक्ति भाव से आप्लावित होकर अपने आप में झूमने लगता है। मीरांबाई की भक्ति जगजाहिर है। किस प्रकार वह भक्ति रस में लीन हो गई और भक्ति की शक्ति से विष भी अमृत बन गया। भक्तिमय संगीत में वह शक्ति है जो अपने आराध्य से, परमात्मा से नजदीकियां बढ़ाकर अपने आप में लीन कर लेता है। बिन्दु से सिन्धु बना देता है।

मुनिश्री नवरत्नमलजी स्वामी जो मेरे उपकारी थे उनको देखकर मेरे मन में भी गीत निर्माण करने की भावना जगी। पर मैं नवदीक्षित था। अध्ययन में जागरूक रहना एवं सेवा करना मेरा पहला दायित्व था। फिर भी कुछ गीत बनाये। समय-समय पर मुनिश्री जम्बूकुमारजी स्वामी (सरदारशहर) ने भी मेरा सहयोग किया। इस तरह कुछ विषयबद्ध एवं औपदेशिक गीत तैयार हो गये।

कुछ संगीतप्रिय लोगों ने इसकी मांग की और यह गीतों की छोटी सी कृति सी बन गई। यह गीत उपयोगी हो, सार्थक हो, भक्ति में शक्ति जागृत करे तो इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

यही शुभाशंसा

मुनि स्वस्तिककुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विषय-सूची

क्र.	गीत	पृ.
1.	नमस्कार महामंत्र	1–3
2.	प्रातः स्मरणीय	4
3.	जैन जगत् के तीर्थंकर	5
4.	चौबीसी	6
5.	चार शरण	7
6.	भगवान ऋषभदेव	8
7.	भगवान महावीर	9, 10
8.	गुरुकृपा	11
9.	आचार्य स्तुति	12
10.	आचार्यश्री भिक्षु	13–20
11.	आचार्यश्री भारीमालजी	21
12.	आचार्यश्री रायचन्दजी	22
13.	आचार्यश्री जीतमलजी	23
14.	आचार्यश्री मघवागणीजी	24
15.	आचार्यश्री माणकलालजी	25
16.	आचार्यश्री डालचन्दजी	26–28
17.	आचार्यश्री कालूरामजी	29–32
18.	आचार्यश्री तुलसी	33–35
19.	आचार्यश्री महाप्रज्ञजी	36, 37
20.	आचार्यश्री महाश्रमणजी	38–42
21.	मर्यादा गीत	43–44

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

22.	संघ भक्ति	45
23.	संथारा	46
24.	कषाय	47
25.	क्रोध	48
26.	मान	49
27.	माया	50
28.	लोभ	51
29.	उत्तम श्रावक	52
30.	सम्यक्त्व	53
31.	अणुव्रत	54
	उपदेशक गीत	
32.	धर्म	55, 56
33.	कैसे आएंगे भगवान	57
34.	प्रभु का जाप	58
35.	मन	59
36.	उपकार	60
37.	झूठ	61
38.	जीवन विज्ञान	62
39.	शिविर	63
40.	सहनशीलता	64
41.	सामंजस्य	65
42.	मीठी वाणी	66
43.	विनय	67
44.	गाली	68
45.	समन्वय	69
46	संस्कार	70
47.	बारहवां व्रत	71

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

48.	क्षणभंगुर दुनिया	72
49.	माटी री काया	73
50.	काया का स्वरूप	74
51.	कर्मफल	75
52.	सफल जीवन	76
53.	दुरंगी चाल	77
54.	अभिमान	78
55.	गुणग्राहक	79
56.	आज और कल	80
57.	चेत् चेतन	81
58.	मानव तन	82
59.	जागृत होने का क्षण	83
60.	अब तो जाग	84
61.	सुखमय जीवन	85
62.	स्वार्थी दुनियां	86
63.	राग–द्वेष	87
64.	रंगीन दुनियां	88
65.	भ्रष्टाचार	89
66.	सत्संगत	90
67.	जैन संत	91
68.	मां	92
69.	तीर्थ	93

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢नमस्कार महामंत्र≺

मंगल मंत्र जपो नवकार।
सार चतुर्दश पूर्वों का है, कर दे बेड़ा पार।। ध्रुव।।

1. द्वादश गुण के धारक तारक वीतराग कहलाते,
आठ कर्म को क्षय करके जो अजर–अमर पद पाते।
धर्म धुरंधर आचार्यों का, है हम पर उपकार।।

2. पंचबीस गुण उपाध्याय के आगम के अधिकारी,
दिव्य प्रभाकर गुण रत्नाकर सन्तों के आभारी।
परमेष्ठी पंचक को ध्याये, करना जो उद्धार।।

3. अमर कुंवर की दृढ़ आस्था ने चमत्कार दिखलाया,
सेठ सुदर्शन की घटना सुन अचरज सबको आया।
अग्नि भी सीता के आगे, बन गई शीतल धार।।

4. शांति प्रदायक सिद्धिदायक अक्षय सुख का दाता,
मंगलकारी भव भयहारी संकट दूर भगाता।
तन्मयता पूर्वक जपने से, होता साक्षात्कार[1]।।

(लय–धर्म की लौ जगाएं हम.....)

---

1. आत्म साक्षात्कार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नवकार मंत्र मंगलकारी, जपने वाले सुख पाते हैं,
चौदह पूर्वों का सार भरा, परमेष्ठी को हम ध्याते हैं।
अ सि आ उ सा–3 हो ऽऽ....., अर्हम़्–अर्हम़्–3 आऽऽ।।ध्रुव।।

1. राग–द्वेष को क्षय करके जो, वीतराग बन जाते हैं,
द्वादश गुण के धारक तारक, देवाधिदेव कहलाते हैं।
उन अरहंतों के चरणों में–2, श्रद्धा से शीश झुकाते हैं।।

2. अष्ट कर्म को नष्ट करे जो, अष्ट गुणों को प्राप्त करे,
शाश्वत सुख में जो लीन रहे, वे सिद्ध पुरुष संताप हरे।
हम भक्ति भाव से नमन करे–2, सिद्धों का ध्यान लगाते हैं।।

3. तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते, आचार्य हमारे उपकारी,
उपकारों को हम भूल न पाएं, सदा रहेंगे आभारी।
छत्तीस गुणों से शोभित है–2, शासन की शान बढ़ाते हैं।।

4. आगम अध्यापन के अधिकृत, प्रज्ञा का दीप जलाते हैं,
जिनकी वाणी सुनकर के हम, भवसागर से तर जाते हैं।
पच्चीस गुणों के अधिकारी–2, वे उपाध्याय कहलाते हैं।।

5. समता रस से जो पूरित है, वे धर्मदेव बन जाते हैं,
जो स्वयं तिरे जग को तारे, गुण सप्तबीस मन भाते हैं।
सब बाधाओं को दूर करे–2, हम गौरव गान सुनाते हैं।।

(लय–है प्रीत जहां की.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महामंगल मंत्र श्री नवकार है।
विघ्न का करता सकल संहार है।। ध्रुव।।

1. बने शूली भी सिंहासन मंत्र से।
अग्नि भी शीतल बने जलधार है।।

2. कष्ट में रक्षा कवच यह मंत्र है।
देख लो कर जाप यह सुखकार है।।

3. मंत्र मंगल शांति का आधार है।
जो जपे उसके सदा जयकार है।।

4. आत्मशुद्धि लक्ष्य हो बस केन्द्र में।
मूल सिंचन से तरु फलदार है।।

5. शुद्धता हो स्पष्टता अनिवार्य है।
साथ आस्था का बने गलहार है।।

6. जपे **''स्वस्तिक''** एक लय से मंत्र को।
समर्पण से ही आत्म उद्धार है।।

(लय–दिल के अरमां.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢प्रातः स्मरणीय≺

जाप जपो यह मंगलकारी, परमेष्ठी होते हितकारी,
रोग शोक भय का संहारी, विघ्न उपद्रव का परिहारी।। ध्रुव।।

1. ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म प्रभु चरणों वन्दन
श्री सुपार्श्व चंदा सुखकारी।
2. सुविधिनाथ शीतल प्रभु प्यारा, श्री श्रेयांस वासु ध्रुव तारा
विमल अनन्त है महिमा धारी।
3. धर्म शांति कुंथु अर स्वामी, मल्लिनाथ है जग में नामी
मुनि सुव्रत है संकटहारी।
4. नमि नेमी प्रभु पारस मनहर, महावीर जिनशासन शेखर
जिनशासन की करें सवारी।
5. गौतम आदिक ग्यारह गणधर, अमृत बरसाया बन जलधर
महक उठी है केशर क्यारी।
6. ब्राह्मी और सुन्दरी बाला, राजीमती सीता गुणमाला
चन्दनबाला सती निहारी।
7. मृगावती कुन्ती दमयन्ती, सती सुभद्रा भी कुलवन्ती
प्रभावती चुल्ला है प्यारी।
8. कौशल्या सुलसा मन भाये, शिवा द्रौपदी पद्मा गाएं
सोलह सतियां सबमें न्यारी।
9. भिक्षु भारीमाल ब्रह्मचारी (रायचन्दजी), जय मघवा माणक धृतिधारी
डालिम कालू तुलसी भारी।
10. महाप्रज्ञ सा नायक पाया, महाश्रमण का अनुपम साया
धर्मसंघ के बने पुजारी।
11. कैसी श्रेष्ठ संपदा पाई, करनी हमको धर्म कमाई
शिव मंजिल से हो इकतारी।

(लय–जय–जय धर्मसंघ.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢जैन जगत् के तीर्थंकर≺

परम प्रभु तीर्थंकर भगवान
ध्यान लगाऊं एक तान से, करूं सदा संगान।। ध्रुव।।

1. अतिशयशाली शक्ति निराली, खिलती चार तीर्थ फुलवारी,
वाणी है अमृत की प्याली,
सुर तिर्यंच मनुज मिलजुल कर, करते नित रसपान।।

2. ध्वनि छत्र उज्ज्वल भामण्डल, चमके दिनकर सा मुखमण्डल,
पुष्प वृष्टि सिंहासन हलचल,
चंवर अशोक वृक्ष सुर दुन्दुभि, से होती पहचान।।

3. क्रोध मान माया को छोड़ा, मोह कर्म का बन्धन तोड़ा,
दृढ़ता से मानस को मोड़ा,
तीन कर्म क्षय कर तत्क्षण ही, पाया केवलज्ञान।।

4. हस्त रत्न ज्यों जग को देखा, मानो हो आलेखित रेखा,
बता रहे कर्मों का लेखा,
शिव सुख मिलता स्व प्रयास से, करूं आत्म कल्याण।।

5. नश्वर तन का सार निकालूं , पूर्वाजित संपत्ति संभालूं,
भव अरण्य से रस्ता पालूं,
''**स्वस्तिक**'' भव्य भावना से ही, बनता मनुज महान।।

(लय–प्रभो! यह तेरापंथ महान.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢चौबीसी≺

पावन तीर्थंकर चौबीस

ध्यान लगाऊं प्रतिपल जागृत होकर श्री जगदीश।। ध्रुव।।

1. ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पद्म प्रभु प्यारा,
श्री सुपार्श्व चन्द्रप्रभु सुविधिनाथ आंखों का तारा।
शीतल श्री श्रेयांस हमें दो आत्मसिद्धि आशीष।।

2. वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त धर्म प्रभु शान्ति जिनेश्वर,
कुंथुनाथ अरनाथ मल्लिजिन मुनि सुव्रत परमेश्वर।
नमि नेमीश्वर पार्श्व वीर चरणों में झुकता सीस।।

3. गणधर गौतम आदि एकदश सतियां सोलह नामी,
आर्यप्रवर भी. भा. रा. जय मघवा माणक गण स्वामी।
डालिम कालू तुलसी महाप्रज्ञ (महाश्रमण) तेरापन्थ ईश।।

4. अन्तर्मन से करूं अर्चना देव मुझे दो दर्शन,
सिंचन ऐसा दो खिलता ही रहे हमेशा उपवन।
''**स्वस्तिक**'' सदा समर्पित रहूं बनूं श्रेष्ठ इक्कीस।।

(लय–धर्म की लौ जगाएं.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢चार शरण≺

ले लो शरणा चार, हर पल मंगल हो जी मंगल हो
हो अच्छे संस्कार, क्षण–क्षण उज्ज्वल हो जी उज्ज्वल हो।। ध्रुव।।

1. अरहन्तों का ध्यान, होता सुखकारी जी सुखकारी।
होगा नव निर्माण, ध्याओ हितकारी जी हितकारी।।

2. सिद्ध अमल अविकार, आत्मिक रमण करें जी रमण करें।
शिव सुख अपरम्पार, क्षीण भव भ्रमण करें जी भ्रमण करें।।

3. पंच महाव्रत सार, पल पल अपनाते जी अपनाते।
कहलाते अणगार, करुणा बरसाते जी बरसाते।।

4. धर्म प्राण है त्राण, सबका शरण यही जी शरण यही।
है यह सुख की खान, तारण तरण यही जी तरण यही।।

5. रहना सदा सचेत, रखना ध्यान सभी जी ध्यान सभी।
करते प्रभु संकेत, करना ज्ञान सभी जी ज्ञान सभी।।

(लय–चांद चढ्यो गिगनार.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢भगवान ऋषभदेव➢

देव हम नहीं भूले, है तेरा उपकार,
जिनेश्वर नहीं भूले, है तेरा उपकार,
कैसे तेरा व्यक्त करें हम, शब्दों में आभार।।ध्रुव।।

1. माता मरुदेवी पिता, नाभी कुल में अवतार।
चालू की गृह राज्य नीति जो, है लौकिक उपकार।।

2. गृहवासी तैयासी पूर्वों, तक फिर बन अणगार।
संयम लेकर दिखलाया प्रभो!, जग को मुक्ति द्वार।।

3. सहस्र वर्ष की साधना से, केवलज्ञान उदार।
चार तीर्थ की करी स्थापना, आई धर्म बहार।।

4. अतिशय की महिमा है भारी, वाणी में रस सार।
शुभ भावों की श्रेणी चढ़कर, पाया भव जल पार।।

(लय–आपणै भागां री.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢भगवान महावीर≺

प्रभु महावीर चरणों में, मेरा प्रणाम हो।
कण–कण को सुरभित करता, प्रभुवर गुणग्राम हो।। ध्रुव।।

1. सिद्धार्थ कुल में जन्में, कुण्डलपुर ग्राम में।
हर्षित है सारी जनता, पाई आराम हो।।

2. थी शक्ति अनूठी तन में, अंगुष्ठ मात्र में।
लघुवय में मेरू हिलाया, सुर चकित तमाम हो।।

3. भर यौवन में ली दीक्षा, सब वैभव छोड़ के।
दीक्षा लेते ही चौथा, हुआ ज्ञान ललाम हो।।

4. स्वाध्याय ध्यान चिन्तन में, आत्मा में लीन हो।
भावों की श्रेणी चढ़ते, बढ़ते हर याम हो।।

5. तप अधिकाधिक छह मासी, परीषह उपसर्ग में।
दृढ़ता अति क्षमापुरुष की, समता के धाम हो।।

6. बन अर्हत् केवलज्ञानी, अतिशय महिमा धारी।
लाखों को पार उतारा, फैला यश नाम हो।।

7. निर्वाण हुआ प्रभुवर का, पावापुर धाम में।
"मुनि स्वस्तिक" प्रभु गुण गाता, बनकर निष्काम हो।।

(लय– अफसाना लिख रही हूं.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ त्रिशला नन्दन, शत्–शत् है वन्दन, प्रभुवर तेरा ध्यान करूं हरदम,
दुःखड़ों को हर लो, समता रस भर दो, प्रभुवर तेरा ध्यान करूं हरदम।
मेरे दिल में, तेरा है नाम, चरणों में है तेरे विश्राम, प्रभुवर.....।ध्रुव।।

1. कण–कण में तुम ही तो बसे हो भगवन्
चरणों में सब कुछ करूं अर्पण,
हो रोशन हर उपवन, तरस रहा हूं हो दर्शन
भगवन्! ये जीवन, तेरे ही सहारे होगा हर पल पावन।। ओ त्रिशला....

2. चरणों का चाकर हूं, स्नेह बंध को क्षीण करूं,
प्यासे को, तृप्ति दो, मनवा ये तुमको पुकारे
पारस के स्पर्शन से, कंचन बन जाए सारे,
भक्ति दो, शक्ति दो–2,
त्रिभुवन के स्वामी हो, इतनी तो अर्ज सुनो।
मुक्ति का वर पाऊं, सुरभित हो मन का आंगन। ओ त्रिशला.....

(लय–ओ पालनहारे....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢गुरुकृपा≺

गुरू चरणों का मैं दास बना, दुनियां से मुझको क्या करना?
प्रभु! मुझे सहारा तेरा है, फिर मुझे किसी से क्या डरना?।। ध्रुव।।

1. सुमिरन से तेरी दृष्टि[1] मिले, दृष्टि से मेरी सृष्टि[2] खिले।
मैं भाव भक्ति से पूज रहा, तेरे पथ पर मुझको चलना।।

2. चरणों का चाकर मैं तेरा, सब कुछ चरणों में अर्पण है।
दृढ़ निश्चय से मैं बैठा हूं, बरसा दो करुणारस झरना।।

3. पंकज से पंक जुदा रहता, जग में रहता निर्लेप रहूं।
जीवन न्यौछावर[3] चरणों में, भव सागर से मुझको तरना।।

4. मैं नर हूं तूं नारायण है, मैं कंकर हूं तूं शंकर है।
सिंचन ऐसा मिलता जाए, बस मुझको केवल है फलना।।

(लय–भगवान तुम्हारे अन्दर...)

1. कृपा 2. भाग्य 3. समर्पण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्य स्तुति➢

तेरापंथ की महिमा हम मिलकर गाये,
उज्ज्वल इतिहास सभी के सम्मुख लाए॥ ध्रुव।।

1. दीपां के लाल दुलारे भिक्षु स्वामी, श्री भारीमालजी थे उनके अनुगामी,
ऋषिराय अनूठे वाणी थी ओजस्वी, श्री जयाचार्य कहलाये बड़े मनस्वी।
मघवा सी मृदुता हम सबमें आ जाए, तेरापंथ.....।।

2. माणक का शासन अल्पकाल कहलाया, डालिम ने भी अद्‌भुत इतिहास बनाया,
कालू की वत्सलता अनुशासन प्यारा, श्री तुलसी ने दिखलाया दिव्य नजारा।
श्री महाप्रज्ञ की करुणा जन–मन भाए तेरापंथ.....।।

3. गणमाली महाश्रमणजी है हितकारी, मर्यादा अनुशासन होते सुखकारी,
इसकी सौरभ हम सबको है फैलाना, जीवन की कली–कली को है विकसाना।
गुरु के चरणों में सविनय शीश झुकाए, तेरांपथ.....।।

(लय–लावणी)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री भिक्षु≺

तेरापंथ की महिमा न्यारी, हम सब मिलकर के गाते हैं।
भैक्षव शासन की सौरभ को, बन मुक्त पवन फैलाते हैं।। ध्रुव।।

1. दीपां के लाल दुलारे थे, बल्लू कुल के उजियारे थे।
नगरी कंटालिया अति प्यारी, जन जन के सम्मुख लाते हैं।।

2. रघुराजा से दीक्षा लेकर, जिनवाणी को फिर अपनाकर।
सतपथ पर कदम बढ़ाया है, चेतन में जोश जगाते हैं।।

3. है शहर केलवा मन भावन, ली दीक्षा भाव सुनहरा क्षण।
आचार्य बनाया है उनको, सब चरणों शीश झुकाते हैं।।

4. मर्यादा अनुशासन हितकर, आचार पक्ष लगता मनहर।
अवसरवादी अनुपम लेखक, जिनशासन को चमकाते हैं।।

5. सिरियारी में सुरलोक गमन, खिल उठा अनूठा नन्दनवन।
तेरापंथ आद्य प्रणेता को, श्रद्धा के कुसुम चढ़ाते हैं।।

(लय–महावीर प्रभु...../भगवान तुम्हारे.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुम्हारी महिमा अपरंपार
गरिमा तेरी कितनी गाए, पाये कभी न पार।। ध्रुव।।

1. सदाचार की अलख जगाई, अनाचार से प्रीत हटाई।
धार्मिकता की राह दिखाई,
उन्नत जीवन हो मनुष्य का, बरसे अमृत धार।।

2. किया सत्य का शोध निरन्तर, आगम गहराई में जाकर।
है इतिहास तुम्हारा सुन्दर,
प्रतिस्रोत में कदम बढ़ाया, सत्य हुआ साकार।।

3. संयम गुण को खूब बढ़ाया, अनुशासन सबके मन भाया।
आज्ञा में ही धर्म बताया,
अरे! भिक्षु हम भूल न सकते, जो तेरा उपकार।।

4. कष्ट बहुत ही तुमको आए, निर्भयता तेरी मन भाए।
बलिदानी जीवंत कथाएं,
प्रगति शिखर पर चढ़े सदा हम, मन में साहस धार।।

5. करता शत–शत मैं अभिनन्दन, चरणों में अर्पित है तन–मन।
हर्षित होता मेरा कण–कण,
शासन की रक्षा करने को, सदा रहें तैयार।।

(लय–प्रभो! यह तेरापंथ महान.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वाम भिक्षु का नाम मंगल मंगल है।
स्वाम भिक्षु का काम मंगल मंगल है।।ध्रुव।।

1. दीपां के लाल दुलारे, बल्लू कुल के उजियारे,
जन–जन के नयन सितारे, लगते हम सबको प्यारे।
नाम में संबल है।।

2. जिनवाणी को अपनाया, फिर आगे कदम बढ़ाया,
प्रभु को दिल में बैठाया, जन–जन को पथ दिखलाया।
वचन गंगा जल है।।

3. भोजन जल अगर न मिलता, फिर भी चेहरा था खिलता,
पग–पग पर बड़ी विषमता, पर जागृत आत्मिक क्षमता।
बड़ा श्रद्धाबल है।।

4. छाती पर मुक्का खाते, पर तथ्य सत्य बतलाते,
कष्टों से कब घबराते?, समता से सहते जाते।
शांत क्रोधानल है।।

5. मंगल को ही तुम आए, मंगल को स्वर्ग सिधाए,
तेरस का योग मिलाए, महिमा हम मिलकर गाएं।
गान अमृत फल है।।

(लय–महावीर का नाम मंगल.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वामीजी रा लक्षण देख मन हरषावै, ज्योतिषी री वाणी सुण अचरज आवै।
दूर दूर स्यूं आवै जनता, सांवरिये रो शुभ नाम रूं रूं रम ज्यावै।। ध्रुव।।

1. श्याम वर्ण हो आंख्या में लाली, चाल ऐरावत सी मतवाली।
दीर्घ देह देख देख मन विस्मय छावै।।

2. भव्य ललाट में रेखा त्रिवेणी, विस्मय पावै दर्शक श्रेणी।
पुण्यवान होनहार जन मन भावै।।

3. गुद्दी[1] ऊपर है त्रिण रेखा, मणि भाग में भी त्रिण रेखा।
कानां पर लम्बा केश सबने सुहावै।।

4. दक्षिण पद में उर्ध्व सुरेखा, जीवणां कर में मच्छ री रेखा।
नाभि पर भी लम्बी रेखा बतलावै।।

5. दस चक्र आंगुली में पाया, उदर में स्वस्तिक बतलाया।
और चिन्ह शुभ ध्वज रो लहरावै।।

6. लक्षण ज्योतिष देख बतायो, सहस्र दो तांई पक्को पायो।
यश कीर्ति भूतल पर बढ़ती ज्यावै।।

7. बाह्य लक्षणां में आ खूबी, भीतर गुणां रो रंग कसूंबी।
महिमा स्वामीजी री मिलजुल जन गावै।।

8. मिल्यो भाग्य स्यूं भैक्षव शासन, एक आचारज रो अनुशासन।
तेरापंथ नाम मुख मुख पर आवै।।

9. तेरस ने आया तेरस सिधाया, तेरह ही साधु श्रावक मिलाया।
"**स्वस्तिक**" संघ री सुषमा फैलावै।।

(लय–स्वामी भिखण रो नाम आठूं.....)

1. गर्दन का भाग।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ सिरियारी के संत लो अभिवंदन

मंगल है नाम तेरा, मंगल है काम तेरा, मंगल है आयाम हो़ऽऽ... ।। ध्रुव ।।

1. सिंह स्वप्न स्यूं मां दीपां रे कुक्षि में अवतार लियो,
रघुराजा रे चरणां में जा संयम व्रत स्वीकार कियो।
आगम रो अध्ययन करणो–2, भव सागर स्यूं है तरणो।।

2. साहस रा थे हा पुतला, मर्यादा गहरी है बांधी,
डिगै न पथ स्यूं बाजै चाहे घोर विरोधां री आंधी।
सम्यक् चिन्तन हो थांरो–2, पथ स्यूं मिट गयो अंधारो।।

3. समकित चारित रा पग पग पर उजला दीप जलाया हा,
एक एक ने समझाकर के सांचो पथ दिखलाया हा।
हीरो सो जीवन पायो–2, संयम स्यूं सफल बणायो।।

4. जन मन रा थे बण्यां देवता गौरव गाथा जन गावै,
संयम रो शुभ पंथ दिखायो मंजिल तक जो पहुंचावै।
''**स्वस्तिक**'' गण री फुलवारी–2, महकी है केशर क्यारी।।

(लय–ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिखण रो शासन अलबेलो, जिनवचनां रो लाग्यो मेलो,
भैक्षण शासन नन्दनवन में, आई नई बहार है।
अनुशासन मर्यादा जीवन रा, बणग्या शृंगार है।।ध्रुव।।

1. राजनगर में श्रावक जन ने, भीखण जाकर समझायो,
वन्दन करणे लाग्या श्रावक, गुत्थी उलझी सुलझायो।
बात न म्हारे मन में उतरी, थांरो कहणो मानां हां,
त्यागी और विरागी थे हो, परमार्थी हो जाणां हां।
रजनी में सहसा ज्वर आयो, चिन्तन रो फिर चक्र चलायो,
प्रातः साफ–साफ कह देस्यूं, बात सही स्वीकार है।।

2. पावस कर गुरु सम्मुख पहुंच्या, देख्यो गुरु रो रंग बदल्यो,
वंदन कर गुरु चरणां झुकग्या, सहसा भीखण स्वर निकल्यो।
जिनवाणी पर चालो तो थे, गुरु हो मैं थांरो चेलो,
सही देव गुरु धर्म प्ररूप्यो, तीर्थंकर रो ओ हेलो।
रोटी खातिर घर नहिं छोड्यो, संयम पालन नातो जोड्यो,
आगे कै होसी परभव में, करणो एक विचार है।।

3. अट्ठारह सौ सतरह संवत्, चैत्र सुदी नवमी आई,
सुन्दर बेला में भिक्षु ने, सही राह है अपनाई।
मिली नहीं जद जग्यां रुकण ने, मरघट भूमि मन भाई,
सुधरी (बगड़ी) री छतरयां में बजगी, धर्म क्रान्ति री शहनाई।
बड़ी भयंकर झंझा चाली, इणस्युं डर्या नहीं गणमाली,
जिनवचनां में जीवन झोक्यो, सफल कियो अवतार है।।

4. चरचा रो तूफान उठ्यो है, भिखण गण ने छोड़ चल्यो,
गुरु जी आया लारै लारै, तीव्र वचन रो बाण चल्यो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भीखण म्हांरी बात मान लै, पंचम आरो चालै है,
सही साधुता पलणी मुश्किल, क्यूं नाहक हट झालै है।
सूत्रां ने पढ़ निश्चय ठानी, जिनवाणी ने है अपनाणी,
जिनमारग पर चाल्या होसी, आत्मा रो उद्धार है।।

5. वचनां ने सुण रघुराजा रे, आंख्यां में आसूं आवै,
शासनपति हो रोवो क्यूं हो, सहचर मुनिवर बतलावै।
जठै जठै तूं जासी आगै, लारै लारै मैं आस्यूं,
नहीं छोड्स्यु लारो थांरो, लोगां ने मैं भडकास्यूं।
भीखण मन में दृढ़ता धारी, रग–रग में है पौरुष भारी,
मान्यो आशीर्वर गुरु वचनां, ने होग्यो साकार है।।

6. तीन माह तक चिन्तन करता, आषाढ़ी पूनम आई,
शुभ बेला में मन स्थिर करके, शुद्ध साधुता अपनाई।
तेरह साधु तेरह श्रावक, सेवक मुख स्यूं वच निकल्यो,
हे प्रभो! यह तेरापथ, स्वामीजी सुणकर नाम धर्यो।
थांरै पथ पर कदम बढ़ावां, सांची श्रद्धा म्हैं अपनावां,
शासन वीतराग रो म्हारै, जीवन रो आधार है।।

7. अन्धेरी ओरी में हुग्यो, जगमग दिव्य प्रकाश है,
परीषह में दृढ़ रहकर रचग्या, एक नयो इतिहास है।
अन्त समय में गुरुवर थांनै, हुयो नयो आभास है,
च्यार तीर्थ ने देग्या प्रभुवर, जिनवाणी सारांश है।
जागरणा ही अन्त समय तक, शक्ति भर्यो थे म्हां मैं भरसक,
''**स्वस्तिक**'' चरण शरण में आया, जग में जय जयकार है।

(लय–तेरांपथ रो भाग्य विधाता.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु के जीवन को, लेना जरा निहार।
भिक्षु के दर्शन को, लो निज दिल में धार।।ध्रुव।।

1. जगा था जब दिल में वैराग, सोचते करना मुझको त्याग।
कहां पर धर्म मिले बेदाग, जगाया चिन्तन को।।

2. किये रघुराजा के दर्शन, हुआ है हर्षित फिर कण कण।
किया फिर चिन्तन और मनन, टिकाया निज मन को।।

3. तत्त्व गहराई से पढ़ते, हृदय में उसको फिर मंढ़ते।
दिनों दिन आगे हैं बढ़ते, मिटाते उलझन को।।

4. जगा अन्दर का जरा विवेक, नहीं है कथनी करनी एक।
लिया है जिन आंखों से देख, जगाते चेतन को।।

5. कह रहे रघु से भिक्षु साफ, नहीं क्यों करते हो इन्साफ।
कर्म किसको करता है माफ, छोडना है तन को।।

6. धर्म क्रान्ति का बिगुल बजा, मोह ममता को दूर तजा।
रमे संगम में तभी मजा, नहीं खोना क्षण को।।

7. कष्ट की घूंटी पी-पीकर, सहजता समता से सहकर।
श्रावकों को फिर समझाकर, खिलाया उपवन को।।

8. वीर के पथ पर है चलना, भिक्षु शासन में फलना।
हमें इस पथ पर ढलना, खिलाना गुलशन को।।

(लय– धर्म में डट जाना.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री भारीमलजी≺

भैक्षव गण नन्दनवन में, आए भारीमाल स्वामीउ
विनयी अनुशासित गण में, आए भारीमाल स्वामी।। ध्रुव।।

1. माता धारिणी उदर में, मुंहा पुर किसनो घर में।
आए बन कुल के दीपक, अनुपम उल्लास मन में।।

2. दीक्षा भिक्षु के द्वारा, चमका है भाग्य सितारा।
सिरियारी में गणनायक, चमके बन ध्रुव गगन में।।

3. भिक्षु के थे पटधारी, विवेकी थे आचारी।
विनयी बन छाप छोड़ी, आई बहार चमन में।।

4. विचरण करते हैं आए, बोधि स्थल चरण टिकाए।
सुरपुर वहीं पर पाए, घटना विख्यात जन में।।

(लय–मंगल है आज तेरे.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री रायचन्दजी≺

गणी रायचन्द गणमाली, शासन की की रखवाली।
फैलाई सुषमा निराली, शासन की की रखवाली।।ध्रुव।।

1. पिता शाह चतुरोजी घर में, जन्म कुशालां मातृ उदर में।
बड़ी रावलिया बम्ब गोत्र में, छा गई खूब खुशहाली।।

2. संस्कारी कुल योग मिलाया, अल्प उम्र में भाव जगाया।
हलुकर्मी प्राणी मन भाया, सत्संगत अमृत प्याली।।

3. मात–पुत्र की हुई परीक्षा, रावलिया (बड़ी) में ली सह दीक्षा।
आर्य भिक्षु की अद्भुत शिक्षा, संयम की करो दलाली।।

4. बने केलवा में युवराजा, राजनगर में बन महाराजा।
तीस वर्ष गण के अधिराजा, भर गई फूल से डाली।।

5. थली देश में प्रथम पदार्पण, वाणी ओजस्वी मन भावन।
शान्त प्रकृति आकर्षित जन जन, ऋषिवर थे प्रतिभाशाली।।

(लय–मेरा रंग दे तिरंगी चोला.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री जीतमलजी (जयाचार्य)≺

जय बोलो कल्लू नन्दन की, भैक्षव शासन नन्दनवन की।। ध्रुव।।

1. चौथे पट्टधर बनकर आए, शासन की सुषमा महकाए
शीतलता जैसे चन्दन की।।

2. आईदान पिता रोयट जन्में, दीक्षा जयपुर हर्षित मन में
पाली की घटना है उनकी।।

3. आचार्य बने बीदासर में, सुरलोक पधारे जयपुर में
क्या कहना जय अनुशासन की।।

4. स्वाध्यायी ध्यानी विज्ञानी, त्रय बन्धव की अद्भुत सानी
नव नव आयाम देन जिनकी।।

5. स्वाध्याय ध्यान में रमण किया, इन्द्रिय विषयों का शमन किया
आकर्षक शैली प्रवचन की।।

6. निज पर शासन फिर अनुशासन, है मर्यादा सुख का साधन
गुण गरिमा बढ़ती जीवन की।।

(लय–सौभाग्य घड़ी जिनशासन.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री मघवागणी≺

महकता नन्दनवन, आए मघ महाराज ।
दीपता पंचासन, है हम सबको नाज।। ध्रुव।।

1. मातृ बन्ना पूरणमल तात, गुलाबां प्रमुखा के थे भ्रात।
बीदासर सुरपुर सा साक्षात्, दीपता कुल नन्दन।।

2. लाडनूं में दीक्षा लेकर, शहर चूरू युवराज मुखर।
गुलाबी नगरी प्रमुख शहर, संभाला है शासन।।

3. यौगलिक युगल बड़ा सुन्दर, विवेकी विनयशील मनहर।
रही मृदुता भी जीवन भर, खिलाया है गुलशन।।

4. बने श्री पंच प्रथम ही बार, कहाये पंडित वचन उदार।
पधारे स्वर्ग शहर सरदार, बड़ा सुन्दर जीवन।।

(लय–धर्म में डट जाना.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री माणकलालजी≺

माणक की महिमा गाएं, माणक ही हमको बनना है।
जीवन को सफल बनाएं, गुण सुमनों को ही चुनना है।। ध्रुव।।

1. होऽऽ हुकमचंदजी थे पिता, माता छोटां बाई।
होऽऽ कुल श्रीमाल में जन्म लें, महिमा खूब बढ़ाई।।

2. होऽऽ मोहनी मुद्रा शोभती, कोमल उनकी काया।
होऽऽ देख विशाल ललाट को, जन जन मन हरषाया।।

3. होऽऽ उठा सकेगा रजोहरण, जय ने जब फरमाया।
होऽऽ दीक्षा की आज्ञा मिली, निकले वचन सवाया।।

4. होऽऽ चन्देरी में ले लिया, संयम पथ हितकारी।
होऽऽ युवाचार्य सरदारशहर, गणी वही सुखकारी।।

5. होऽऽ साढ़े चार वर्ष का, शासन काल बताया।
होऽऽ यात्राएं भी खूब की, अमृत रस बरसाया।।

(लय–हवा में उड़ता जाए.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री डालचन्दजी≺

सप्तम आचारज, अनुशासन देख्यो थांरो जोर रो।
ख्याति बढ़ाई संघ री, कर दियो नयो निर्माण हो।। ध्रुव।।

1. उज्जैनी नगरी मिली, मां जडावां रा थे लाल हो।
पूज्य बण्या थे कच्छ रा, पाकर गण हुयो निहाल हो।।

2. तेजस्वी आभावलय, है स्पष्ट वृत्ति विख्यात हो।
वाणी में ओजस्विता, जन जन देख्या साक्षात् हों।।

3. पग ''म'' धरीजो पूंछ पर, नहिं तर लागै फुंफकार हो।
सीधे रस्ते चालणो, सुन्दर होवै आचार हो।।

4. मुनि तिरखा को संघ स्यूं, झटके तोड्यो संबंध हो।
खामी किंचित भी कठै, न सहन हुवैला द्वंद हो।।

5. सूत्रा रा ज्ञाता थे, जिनवाणी रो आधार हो।
बड़भागी ओ संघ है, मानै थांरो उपकार हो।।

(लय–भीखण जी स्वामी भारी मर्यादा.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छा रहा कण–कण में उल्लास,
चन्देरी में आज सुनाता, डालिम का इतिहास।।ध्रुव।।

1. नगर उज्जैनी पावन, बालवय में संयम धन,
जगाई सुप्त चेतना हुआ कण–कण में स्पन्दन।
करी है खरी कमाई, सुगुरु से मिली बधाई,
ज्ञान कंठा में शोभित यही शिक्षा है पाई।
बढ़ते–चढ़ते रहे सदा ही, होता रहा विकास।।

2. समय का लाभ उठाए, संघ का मान बढ़ाए,
उदयपुर की सुन घटना सुगुरु अमृत बरसाए।
विलक्षण प्रवचन शैली, छाप छोड़ी अलबेली,
कच्छ पूजी कहलाए संघ की सुषमा फैली।
चम–चम चमका भाग्य सितारा, फैला नव्य प्रकाश।।

3. संघ में धाक जमाई, संघ की है पुण्याई,
संघ मिलकर के सारा करे तेरी अगुवाई।
यही आ चर्य समाया, नाम मेरा क्यों आया?
मति सब न्यारी–न्यारी कौन चिन्तन है लाया?
चन्देरी नगरी पट्टोत्सव, फूलफगर आवास।।

4. दृष्टि गुरुवर की पाई, लाडनूं महर कराई,
दूलीचन्दजी श्रावक की अर्ज पर दृष्टि टिकाई।
सूर्य पश्चिम में आया, सुगुरु ने ध्यान लगाया,
अचानक स्वर्ग पधारे मगन ने शरण सुनाया।
"स्वस्तिक डालिमगणि" सा नेता, इस तन का है भवास।।

(लय–भगत के वश में है भगवान्....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सप्तम आचारज के, गुण गौरव गाएं रे।
चन्देरी–2, की धरती, तुझे आज बुलाए रे।।ध्रुव।।

1. उज्जैनी नगरी का, वह दिव्य सितारा था,
शासन में हर इक को, प्राणों से प्यारा था।
कालू के चिन्तन को–2, फिर सभी बधाए रे।।

2. फुंफकार नाग करता, जब कोई छेड़ेगा,
मर्यादा अनुशासन, से मुंह को मोड़ेगा।
डालिम के वचन अमोल–2, संयम सरसाए रे।।

3. कच्छ के पूजी कहते, शासन को चमकाया,
सब काम बने उसके, श्रद्धा से जो ध्याया।
कालू खां की घटना–2, सम्मान बढ़ाए रे।।

4. तेरी एक एक घटना, शासन की शान है,
नेतृत्व विलक्षण था, तेरी पहचान है।
सौभागी चन्देरी–2, तेरा ध्यान लगाए रे।।
जन–जन में अब ''**स्वस्तिक**''–2, नव जोश जगाए रे।।

(लय–सिरियारी वाले....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री कालूगणी≺

गण नन्दनवन को मिले, कालूगणी गणनाथ।
श्रद्धा अर्पण कर रहे, पधारो म्हांरा नाथ।।उड़ान।।
लगा है गंगापुर में रंग–2,
छोगां नन्दन के हाथों में, चमका भैक्षव संघ।।ध्रुव।।

1. नान्हीवय में ली दीक्षा, पाई संयम की शिक्षा,
सुगुरु के श्री चरणों में करी है आत्म समीक्षा।
मनै नहीं आवै देसी, धरा में देसूं देसी,
मिली है कृपा गुरु की, खिली फुलवारी कैसी।
द्वार खुले सब बन्धन टूटे–2, मिला गुरु का संग।।

2. मगनजी आगे आए, पाट पर उन्हें बिठाए,
चमकता आभामण्डल कहां रवि ये छुप पाए।
संभाला जब ये शासन, दिखाया है अनुशासन,
संपदा बढ़ती चढ़ती दीपता अष्टम आसन।
कालू गुरु के छत्र छांव में–2, सब में नई उमंग।।

3. गंगापुर भाग्य सवाए, चौमासा गुरु का पाए,
सुगुरु ने वचन निभाया संघ के गौरव गाएं।
नहीं कोई भी जाने, नहीं कोई भी माने,
अकल्पित सी यह घटना कौन इसको पहचाने।
गंगापुर में छाई हलचल–2, सभी रह गए दंग।।

4. नए अधिराजा तुलसी, पाट पर बैठे तुलसी,
देखने को जन आए लगे यह कैसा तुलसी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संघ के भाग्य सवाये, संघ में मोद मनाएं,
गंगापुर का यह पावस, हर्ष जन–जन में छाए।
श्रद्धानत हम करे वंदना–2
"स्वस्तिक" चरणों करे वंदना–2, बजे खुशी के चंग।।

5. पधारो कालूगणिवर, गंगापुर की धरती पर,
यहां का दृश्य निहारो, यह छठ का पावन अवसर।
रोम–रोम में पुलकन छाई–2, झूम उठे सब अंग।।

(लय–भगत के वश में है.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चम चम चमके संघ ये, आज अनोखी छाप।
बढ़ चढ़ गणमाली मिले, हरने जग का ताप।।उड़ान।।
अष्टम अधिराजा के, गुण गौरव गाएं रे।
गंगापुर–2, की धरती, तुझे आज बुलाए रे।। ध्रुव।।

1. मां छोगां संग मिला, संयम का फूल खिला,
मघवा की कोमलता, आशीर्वर तुझे मिला।
गुरुवर की कृपा मिली–2, गण भाग्य सवाए रे।।

2. डालिम गणि के दिल में, विश्वास जमाया था,
फिर बागडोर तेरे, हाथों संभलाया था।
तेरी निस्पृहता जो–2, वो याद आए रे।।

3. वत्सलता अनुशासन, की अजब कहानी है,
बिकाणे की घटना, होती जुबानी है,।
संयम की वह सानी–2, हममें आ जाए रे।।

4. श्रद्धा से जो ध्याते, मन वांछित फल पाते,
गुरु **महाश्रमण** अनुभव, जन जन को बतलाते।
"स्वस्तिक" मंगल होगा–2, जागृति आ जाए रे।।

(लय–सिरियारी वाले का.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गंगापुर रो भाग्य खिल्यो, गुरुवर कृपा प्रसाद मिल्यो
कालू गणिवर आज बुलावां–2, बेगा पाछा आओ नी
गण बगियां महकाओ नी।।ध्रुव।।

1. मां छोगां रा प्राण पियारा, कोठारी कुल रा उजियारा
छापर धरती ने सरसावां–2, बेगा.....।।

2. मां री ममता जद है जागी, दैविक शक्ति भी है भागी
थांरो प्रतिपल ध्यान लगावां–2, बेगा....।।

3. ज्योति किरण बन थे हा आया, तेरापंथ रा भाग्य सवाया
जन जन रा अब भाग्य जगावां–2, बेगां.....।।

4. दिन–दिन शासन शिखर चढ्यो, थांरै हाथां पल्यो बढ्यो
मन मन्दिर में थांनै बिठावां–2, बेगा.....।।

5. तुलसी ने संभलायो भार, महाप्रज्ञ शासन शृंगार
महाश्रमण ने नित उठ ध्यावां–2, बेगा.....।।

(लय–कल्पतरू रा बीज फल्या.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्य तुलसी≺

तावड़ो फिको पड़ ज्यावै, चमक तारा री उड़ ज्यावै।
म्हांरै गुरुदेव रे चरणां में तो चंदो सरमावै।।ध्रुव।।

1. बचपन स्यूं ही तेजस्वी, संस्कार खूब पावै।
कालू गुरु री छत्र छांव में, जीवन विकसावै।।

2. अनुशासन री शैली थांरी, जन मन ने भावै।
श्रम निष्ठा पौरुष वत्सलता, इमरत बरसावै।।

3. अणुव्रत रो अभियान निरालो, मानस हरसावै।
आगम रो ओ काम अनूठो, कुण कर दिखलावै।।

4. नई पुराणी नीति समन्वय, बगियां महकावै।
अलबेली जीवन री शैली, संयम सरसावै।।

5. काया कल्प कर्‌यो दुनियां रो, जन–जन नित ध्यावै।
सांस सांस जोवै बाटड़ली, कद प्रभुवर आवै।।

(लय–तावड़ो धीमो.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी तुलसी तुलसी तुलसी, तुलसी है आंखों का तारा।
युग द्रष्टा युग स्रष्टा तुलसी, तुलसी लगता सबको प्यारा।।ध्रुव।।

1. माता वदनां का प्यारा था, झूमर कुल का उजियारा था।
चन्देरी, का वह भाल बना, गण नभ में चमका ध्रुवतारा।।

2. आंखों में तेज झलकता था, वाणी में ओज बरसता था।
कंचन सी, अनुपम वह काया, दिल में बहती शीतल धारा।।

3. नेतृत्व विलक्षण था तेरा, कर्तृत्व विलक्षण था तेरा।
जीवन का, कण–कण सुरभित था, जग याद करे तुमको सारा।।

4. असली आजादी अपनाओ, अणुव्रत को घर घर पहुंचाओ।
निज पर, शासन फिर अनुशासन, प्रचलित है जन–जन में नारा।।

5. शोभित होते तुलसी जैसे, गणमाली महाश्रमण वैसे।
अवदान तुम्हारे फैल रहे, तुलसी तेरी कृति के द्वारा।।

(लय–दुनिया में देव अनेकों...)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी तुलसी मेरे गुरुवर, कहां पर गए तुम हमें छोड़कर?
दिल में है तेरी यादें भरी, कैसे दिखाऊं मैं दिल चीरकर?।। ध्रुव।।

1. उपवन में जाकर मैं देख रहा, फूलों की खुशबू में खोज रहा,
कल कल की आवाज करती नदी, सरिता के तट पर मैं सोच रहा।
पक्षी के कलरव समझ ना सका, कैसे मिलेगी तेरी खबर।।

2. भंवरों को देखा जगी चेतना, तन्मयता से करूं एषणा,
ध्यान लगाकर मैं बैठा तभी, शब्दों में तुलसी की है स्पंदना।
मंजिल मंजिल बढ़ता रहा, सुरभित बनेगी मेरी डगर।।

3. यादों को ताजा करता रहा, चिन्तन निरन्तर चलता रहा,
महाश्रमण में तुम मिल गए, चेहरा खुशी से खिलता रहा।
प्रमुदित मना कर रहा अर्चना, कृपा पूर्ण तेरी बरसे नजर[1]।।

(लय–तेरा मेरा प्यार अमर....)

1. आशीर्वाद की कामना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री महाप्रज्ञजी➢

महाप्रज्ञ को ध्याये ये सारा जमाना, ये सारा जमाना
प्रगति मंत्र के उद्‌गाता का, जग ये बना दिवाना।। ध्रुव।।

1. तेरापंथ के भाग्योदय, जिनशासन के प्रहरी,
निष्ठा और समर्पण से, प्रतिभा तेरी निखरी।
कण–कण में आदर्श तेरा यह, लगता बड़ा सुहाना।।

2. करुणा का रस झरता था, प्रज्ञा के अवतारी,
वीतरागता के साधक, महक उठी गणबाड़ी।
आगम के अनुसंधाता ने, पाया दिव्य खजाना।।

3. ज्योतिर्मय जीवन तेरा, देता नव संदेश,
श्रेष्ठ शुभंकर तव वाणी, दूर करे संक्लेश।
एक बार आकर के विभुवर, सबकी प्यास बुझाना।।

4. महाप्रज्ञ में तुलसी है, तुलसी की वाणी,
प्रेक्षा की ज्योति तेरी, प्रभुवर कल्याणी।
महाश्रमण गणनायक अब, जन जन के भाग्य जगाना।।

(लय–जन्म–जन्म का साथ है.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुमको शत शत वन्दन।
बालु सुत हम तेरे गुणों का करते हैं अभिनन्दन।। ध्रुव।।

1. आंखे तेरी ऐसी मानो, नभ में ज्यों ध्रुव तारा,
आभा तेरी ऐसी दमके ,रवि का दिव्य उजारा।
रोम–रोम में शीतलता थी, जैसे शीतल चन्दन।।

2. दिल में तेरे निर्मलता थी, जैसे गंगा का जल,
वत्सलता थी इतनी जैसे, मां का कोमल आंचल।
ऋजुता को जब देखूं तुझमे, जैसे छोटा नन्दन।।

3. वाणी में रस इतना मानों, मिश्री घोल पिलाई,
ज्ञान तुम्हारा गहरा इतना, सागर सी गहराई।
मेरू जैसे निश्चल थे तुम, मन में जरा न स्पन्दन।।

4. तुलसी के पटधारी तुमने विजयी ध्वज फहराये,
यात्रा अहिंसा के माध्यम से जग में जागृति लाये।
''**मुनि स्वस्तिक**'' तेरे गुण गाकर आये हर्षानन्दन।।

(लय–संयममय जीवन हो....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आचार्यश्री महाश्रमणजी≺

महाश्रमण के चरण कमल में वन्दन सौ–सौ बार
तेरी महिमा अपरम्पार।।
भूल नहीं सकते हैं गुरुवर हम तेरा उपकार
तेरी महिमा अपरम्पार।।ध्रुव।।

1. अद्भुत तेरा अनुशासन है, वत्सलता का दिग्दर्शन है,
निश्छलता तेरी अनुपम है, गंगा सा निर्मलतम मन है।
प्रवचन शैली जन मन मोहक, करती नव संचार।।

2. है पुरुषार्थ प्रेरणादायी, और समर्पण भी फलदाई,
मौन साधना है वरदाई, दर्शन तेरे है सुखदाई।
दिव्य दिवाकर गुण रत्नाकर, मेरे प्राणधार।।

3. नयनों में है चित्र तुम्हारा, दिल में करता है उजियारा,
जब भी मैंने तुम्हें निहारा, मिलता मुझको सबल सहारा।
रोम–रोम में पुलकन छाए आए नई बहार।।

4. संयम की हम ज्योति जलाएं, आशीर्वर प्रभुवर का पाएं,
महक उठेगी सभी दिशाएं, गुरुवर की हम महिमा गाएं।
मंगल ''**स्वस्तिक**'' नया उकेरे, वंदन हो स्वीकार।।

(लय–देख तेरे संसार की.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मां नेमां रो लाल–2, झूमरमल रो नयन सितारो है–2, ओ हार हिया रो है।
तेरापंथ रा भाल–2, लागै सब स्यूं ही न्यारो है–2, ओ सगला ने प्यारो है।। ध्रुव।।

1. छाई ही खुशियां, सरदारशहर में जद, नेमां पुत्र जण्यो,
दूगड़ कुल आया, मोहन नाम धर्‌यो, मोहन सो है बण्यो।
होऽऽ बचपन में जाग्यो–2, वैराग सुप्यारो है–2, ओ नयन नजारो है।।

2. जन्मभूमि बणगी, दीक्षा रो इतिहास, गण रो भार मिल्यो,
तीनूं एक जग्यां, सुंदर ओ संयोग, शासन भाग्य खिल्यो।
होऽऽ गुरुवां रे दिल खास–2, बण्यो हाथ रो सहारो है–2, ओ लागै ध्रुव तारो है।।

3. अद्‌भुत ज्ञानाचार, निर्मलतम आचार, आस्था रा उपवन,
हरी भरी श्रद्धा, सुरभित है कण–कण, मन गंगा पावन।
होऽऽ शुद्ध चरित्राचार–2, लागै सूरज सो उणियारो है–2, सौभाग हमारो है।।

4. पड़ै जठै चरण, टिकै म्हांरा नयन, रहूं बण परछाई,
आंख खुली चाहे, ध्यान लगाऊं मैं, छवि दिल मैं छाई।
होऽऽ महातपस्वी आप–2, म्हांनै शरणों ही थांरो है–2, ओ भक्त तुम्हारो है।।

(लय– तेरस री है रात.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरु महाश्रमण युग नायक है,, जन जन के मुख से स्वर निकले।
चिंतामणी सा फलदायक है, मनवांछित सब अरमान फले।। ध्रुव।।

1. मंगलमय तेरा है दर्शन, मंगलमय चरणों का स्पर्शन।
मधुरिम–मधुरिम मुस्कानों से, हम सबको नव आलोक मिले।।

2. प्रवचन तेरा मंगलकारी, सुनते हैं जो भी नर–नारी।
पथदर्शन, उनको मिल जाता, जीवन की दशा–दिशा बदले।।

3. अद्भुत है ज्ञानाचार तेरा, अद्भुत चारित्राचार तेरा।
पापों से, भरे हुए पापी, गिरते–गिरते वे भी संभले।।

4. आभामंडल तेजस्वी है, अनुशासन भी वर्चस्वी है।
पौरुष की, गाथा सम्मुख है, सुनकर आत्मा में ज्योति जले।।

5. चरणों में तेरे जो आता, सुख शांति से वह भर जाता।
नतमस्तक, **"स्वस्तिक"** चरणों में, श्रद्धा के अनुपम सुमन खिले।।

(लय–दुनिया में देव अनेकों....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरु की दृष्टि में, गुरु के चरणों में, दुनियां सारी है। महाश्रमण–4
गुरु ही मंदिर है, गुरु ही पूजा है, भक्त पुजारी है। महाश्रमण–4।। ध्रुव।।

1. सांसों का सरगम है तूं ही–2,
तेरे बिना तो जीवन सूना जीवन उपवन तूं ही
मेरी शक्ति तूं, मेरी भक्ति तूं, मंगलकारी है! महाश्रमण–4

2. घोर तिमिर में तूं है उजाला–2,
ध्यान लगाता जब भी तेरा तूं ही मेरा सहारा
मेरी मंजिल तूं , मेरा हरपल तूं , महिमा न्यारी है।। महाश्रमण–4

3. तेरे वचनों का अतिशय है–2,
पापी भी सुनकर तर जाते मिट जाते संशय है
सोहनी सूरत है मोहनी मूरत है , केशर क्यारी है। महाश्रमण–4

4. आसन पर प्रभु तूं तो सोहे[1]–2,
तेजस्वी है आभामण्डल मन ये सबका मोहे
शासन शेखर तूं , पारस मनहर तूं , तूं हितकारी है। महाश्रमण–4

(लय– तूं कितनी अच्छी.....)

1. शोभित होना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी भक्त आया लेके, तुलसी की निशानी।
अणुव्रत की सुन ले, इनसे कहानी।।ध्रुव।।

1. हिंसा से दुनियां है बहरी, कौन बनेगा इसका प्रहरी।
जन–जन में अहिंसा की चेतना जगानी।।

2. नैतिकता जीवन में आए, प्रामाणिकता दिल में छाए।
इसकी प्रतिष्ठा बनेगी कल्याणी।।

3. नास्तिक भी आस्तिक बन जाए, छोटे–छोटे व्रत अपनाये।
जीवन परिवर्तन की बात है सुहानी।।

4. मैत्री करुणा और समन्वय, मन मंदिर ही है देवालय।
तुलसी ने जीवन की की है कुर्बानी।।

5. तुलसी ने अभियान चलाया, महाप्रज्ञ ने उसे बढ़ाया।
अब महाश्रमणजी करे अगवानी।।

6. अणुव्रत का स्वर धूम मचाए, जन–जन में नवजोश जगाए।
सारे जहां गूंजे एक ही वाणी।।

(लय–राम भक्त ले चला रे...)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢मर्यादा गीत➢

स्वामीजी का शासन, प्राणों से प्यारा है।
मर्यादित–2, यह शासन, आंखों का तारा है।। ध्रुव।।

1. स्वामीजी ने श्रम कर, पगडंडी बना दिया,
डंबर की सड़क बना, जय ने है स्वच्छ किया।
तुलसी ने इस पथ को–2, फिर खूब संवारा है।।

2. स्वामीजी ने सबको, दर्पण था दिखलाया,
फिर जयाचार्य ने तो, मुख दर्शन करवाया।
जन जन में यह अहसास–2, तुलसी के द्वारा है।।

3. भिक्षु ने सुन्दर सा, इक वृक्ष लगाया था,
सिंचन कर जय ने फिर, फलवान बनाया था।
तुलसी ने स्वाद चखा–2, दे दिया सहारा है।।

4. मिश्रीवत् धर्म सभी, हित होता हितकारी,
जय **''विघ्न हरण''** रचना कितना मंगलकारी।
तुलसी ने अणुव्रत से–2, जन जन को तारा है।।

5. पूर्वाचार्यों ने तो, शिखरों पर पहुंचाया,
महाश्रमण संघपति का, हम सब पर है साया।
कण कण में हो **''स्वस्तिक''-2**, यह संघ हमारा है।।

(लय–सिरियारी वाले का.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वामीजी का गणनन्दनवन इसकी आब बढ़ाना है।
मर्यादा में रहकर अपना जीवन शुद्ध बनाना है।।ध्रुव।।

1. अनुशासन ही धर्म हमारा अनुशासन ही कर्म है,
अनुशासन शिव शर्म[1] कहूं अनुशासन आगम मर्म है।
बिना तर्क गुरु निर्देशन को हर पल शीश चढ़ाना है।।

2. चातुर्मास कहां पर करना? गुरुवर का आदेश जहां,
शेषकाल मे कहां विचरना? शास्ता का निर्देश वहां।
गुरु आज्ञा में रहना, लिखना, पढ़ना और पढ़ाना है।।

3. चेला चेली सब है गुरु के मेरेपन का भार नहीं,
गुरु चरणों में अर्पण जीवन संयम का है सार यही।
शासन पौष्टिक दूध हमें तो मिश्री बन घुल जाना है।।

4. मर्यादा में खाना–पीना मर्यादा में बोलना,
विनय मंत्र अनुशासन ऊंचा अंतर घट पट खोलना।
मर्यादा ही हितकर मेरा इसे समझ समझाना है।।

5. हरा–भरा खिलते फूलों सा वातावरण समूचा है
तेरापंथ महान देख लो दिन दिन ऊंचा पहुंचा है
"मुनि स्वस्तिक" आराधक पद में अपना नाम लिखाना है।।

(लय–बाजरे री रोटी पोई.....)

1. महल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢संघ भक्ति≺

हर्षित होता पुलकित होता, कण–कण आज हमारा है।
तेजस्वी यह संघ हमारा, चमका बन ध्रुव तारा है।
जय–2 संघ महान–4।। ध्रुव।।

1. उपवन में नव फूल खिला है, महक अनूठी इसकी है,
सागर से निकला है मोती, दमक अनूठी जिसकी है।
दिव्य भास्वर सम्मुख देखे, ऐसी हिम्मत किसकी है,
पुष्पित, सुरभित फलदायी यह, नीवें गहरी इसकी है।
मंगल गातीं लहरों ने भी, जिसके चरण पखारा है।।

2. है इतिहास उन्हीं का जिसने, आगे कदम बढ़ाया है,
फौलादी चट्टानों को भी, जिसने दूर हटाया है।
प्राणों की परवाह नहीं, उसने ही मंजिल पाया है,
भैक्षव शासन स्वामीजी का, इसकी शीतल छाया है।
बढ़ा सदा बढ़ता जाएगा, शासन प्रहरी द्वारा है।।

3. अनुशासन, मर्यादा इसके, प्राण–त्राण सम्मान है,
विनयशीलता और समर्पण, शासन की पहिचान है।
श्रद्धा भक्ति हो जीवन में, जिससे बढ़ती शान है,
गुरु इंगित सर्वस्व बने यह, चरण बने गतिमान है।
गुरु कृपा ही छत्र हमारा, मिलता रहे सहारा है।।

(लय–आओ बच्चों तुम्हें.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢संथारा≺

संथारो करणो, सुणल्यो मुश्किल है पथ पर चालणो।
समता में रमणो, सुणल्यो मुश्किल है पथ पर चालणो।।ध्रुव।।

1. बातां करणी सोरी सोरी, रात जगाणी दोरी।
खाणो खाणो सोरो सोरो, भूख काढ़णी दोरी।।

2. शास्त्रां में है तीन मनोरथ, भाग्यवान कर पावै।
राग–द्वेष री काट ग्रन्थियां, विजयी ध्वज लहरावै।।

3. चढ्यो शूर संग्राम भूमि में, जोश भर्यो रग–रग में।
नाश शत्रु रो करके आवै, विजय हुवै पग–पग में।।

4. तेरापंथ इतिहास गजब है, एक–एक रो लेखो।
वीर वृत्ति स्युं बढ्या बढ़ै है, सब नजरां स्यूं देखो।।

5. क्षमायाचना करके सबसे, जो हल्को बण ज्यावै।
"मुनि स्वस्तिक" आराधक पद में, अपणो नाम लिखावै।।

(लय–समता रा सागर...)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢कषाय≺

भव–भव में कष्ट उठाया, पर कारण समझ न पाया।
कितना चक्कर है खाया, भव भव में कष्ट उठाया।।ध्रुव।।

1. चार कषाय मूल है इसके, भटक रहे नए इसमें फंसके।
सत्य वचन सुनकर के झिझके, क्यूं न विवेक जगाया।।

2. क्रोध पिशाच रूप में आता, रोम–रोम कंपन छा जाता।
सत् चिन्तन की शक्ति मिटाता, कर देता प्रीत सफाया।।

3. बात बात में जोश जगाता, जगह प्रेम के रोष दिखाता।
नहीं समन्वय को अपनाता, विनय धर्म विसराया।।

4. चाल वक्र है बुद्धि वक्र है, चला रहा छल छद्म चक्र है।
मक्खन तज ले रहा तक्र है, मैत्री का मूल ढ़हाया।।

5. जहां लाभ है वहां लोभ है, जहां लोभ है वहा क्षोभ है।
धन का करता व्यर्थ रौब है, माया की चंचल छाया।।

6. दूर कषाय करो सुख पाओ, राग–द्वेष की अग्नि बुझाओ।
समता के शुभ भाव जगाओ, **"स्वस्तिक"** ने पथ बतलाया।।

(लय– मेरा रंग दे तिरंगी चोला....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢क्रोध≺

क्रोध बड़ा विकराल है, होती आंखे लाल है।
नहीं भान कुछ रहता उसको करता बड़ा धमाल है।। ध्रुव।।

1. आंखों में आती है लाली जोश बहुत दिखलाता है,
रोम–रोम में कंपन छाता रौद्र रूप में आता है।
बिगड़े उसकी चाल है, बन जाता वह काल है।।

2. बहुत पुराना प्रेम परस्पर क्षण में सारे तोड़ेगा,
अपशब्दों की कर बौछारे मुंह से क्या–क्या बोलेगा।
जी का यह जंजाल है, कर देता बेहाल है।।

3. अपनों पर भी हाथ उठा दे नहीं जरा उनसे डरता,
नहीं दूसरों की वह सुनता मनमानी अपनी करता।
लगा रहा फूंफकार है, करता वह तकरार है।।

4. नशा भयंकर होता है यह इनसे बचना चाहिए,
जहां क्रोध पैदा हो जाए वहां न रहना चाहिए।
खाता दूध उबाल है, मत खींचो तुम खाल है।।

5. सहने की क्षमता जागृत हो ऐसा लक्ष्य बनाना है,
शांतिप्रसाद बने हम सारे ज्वाला नहीं दिखाना है।
बने सभी खुशहाल है, पहनो मुक्तिमाल है।।

(लय–चलना आखिरकार है.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢मान≺

मान का कब होता सम्मान
छोटी सी ठोकर खाकर के होता लहूलुहान।।ध्रुव।।

1. मानी ऊंची गर्दन रखता, अकड़–पकड़ में व्यर्थ उलझता
नहीं विवेक की उसमें क्षमता
भार जगत् का ढ़ोता रहता, मानी ऊंठ समान।।

2. सुने प्रशंसा फूल उठेगा, सत्य वचन वह नहीं सुनेगा
ऊंची टांग सदा रखेगा
हो जाता प्रतिकूल सुने जब, वह अपना अपगान।।

3. प्रथम पंक्ति में नाम चाहता, सुनना निज गुणगान चाहता
किन्तु न करना काम चाहता
राग–द्वेष को तजने वाला, करता है उत्थान।।

4. हीन भावना कुंठा लाता, अहं भाव भी निम्न बनाता
मन में जो समभाव जगाता
"**स्वस्तिक**" पल पल नमना सीखो , विनय धर्म को मान।।

(लय–प्रभो! यह तेरापंथ.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢माया≺

फैल रही है जग में माया, कोई इसको समझ न पाया।। ध्रुव।।

1. बड़ों बड़ों को माया छलती, समझ न आती अपनी गलती।
कुटिल चाल नागिन सी चलती, कितनों को विष डंक लगाया।।

2. कूट तोल–माप है करता, मन में विष बाहर मधु झरता।
राम नाम है मुख में धरता, स्वार्थ भाव है कैसा छाया।।

3. सत्य बात को गलत बनाता, गलत बात को सत्य बताता।
सिद्ध उसे फिर वह करवाता, चंगुल में नर इसके आया।।

4. मकड़ी जैसा जाल बिछाता, बगुले जैसा ध्यान लगाता।
टेढ़े पथ पर कदम बढ़ाता, फंसकर इसमें मन पछताया।।

5. सूई जैसी रखो सरलता, बालक जैसी हो निश्छलता।
सीधे रस्ते जो भी चलता, **"स्वस्तिक"** मार्दव को अपनाया।।

(लय–जय–जय धर्म संघ.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢लोभ≺

लोभ है सब पापों का बाप।
पाप अनेक जन्मते इससे, होता अति संताप।। ध्रुव।।

1. धन के पीछे दौड़ लगाते, भूख प्यास कुछ याद न आते,
जाने कितने कष्ट उठाते।
मृग तृष्णावत् प्यास बुझे कब, तृष्णा बढ़े अमाप।।

2. आखिर तो रोटी है खाना, चाहे धन से भरा खजाना,
हीरे–पन्ने नहीं चबाना।
धन से शांति नहीं मिलती क्यों, करते माया-जाप।।

3. भूल हिताहित लोभ जगाए, कष्टों से फिर मन घबराए,
अन्य कषाय को भी विकसाए।
जाने कितने कर्म बांधता, कर कर झूठे पाप।।

4. चक्री सुभूम नरक में जाता, मम्मण कितने कष्ट उठाता,
कथा कपिल की शास्त्र सुनाता।
है संतोष जहां पर **''स्वस्तिक''**, मंगल अपने आप।।

(लय– प्रभो! ये तेरापंथ.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢उत्तम श्रावक➢

श्रावक कुछ चिन्तन अपनाओ, क्षण–क्षण अपना सफल बनाओ।। ध्रुव।।

1. श्रद्धा हो जिसके जीवन में, हो विवेक जिसके कण–कण में।
कर्म काटता है वह श्रावक, अर्थ हृदय में तुम बैठाओ।।

2. पहली कक्षा सुलभ बोधिजन, चढ़े द्वितीय उपासक सज्जन।
व्रतधारी तो तृतीय कक्ष में, चौथा प्रतिमाधर बतलाओ।।

3. शम–संवेग मोक्ष अभिलाषा, हो वैराग्य दया परिभाषा।
आस्तिकता जिसके घट–घट में, लक्षण यह तो पांच बताओ।।

4. प्रथम ज्ञान हो तभी आचरण, ज्ञान बिना सूना सा उपवन।
जीव–अजीव तत्त्व को जानो, पापभीरुता दिल में लाओ।।

5. सप्त व्यसन के होते त्यागी, बारह व्रत ग्रहते बड़भागी।
दान दया को पहले समझो, उपवन में सौरभ फैलाओ।।

6. संयम जीवन में जब आए, जागरूकता बढ़ती जाए।
कर्म बंध से पल–पल बचना, सच्चे श्रावक फिर कहलाओ।।

7. जिन वचनों में सार भरा है, उतरे जो इसमें गहरा है।
श्रावक की पहचान यही है, व्रत धारण कर त्याग बढ़ाओ।।

8. श्रावक के है एकबीस गुण, ग्रहण करो तुम उनको चुन–चुन।
आध्यात्मिक उत्थान करो अब, मोक्ष सुखों को तुम पा जाओ।।

(लय–जय–जय धर्म संघ.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢सम्यक्त्व≺

स्वीकारो समकितजी, पायो है मानव रो अवतार,
देख्यो बहुत बड़ो संसार, न पायो अब तक इण रो पार,
समकित बिन होसी ना उद्धार, स्वीकारो समकित जी।।ध्रुव।।

1. देव–गुरु–सद्धर्म तीन है, समकित रा आधार।
श्रद्धा जिनवाणी पर राख्यां, ही होसी उद्धार।।

2. दान दया नव तत्त्व द्रव्य छह, रो आवश्यक ज्ञान।
सावद–निरवद धर्म और, व्रत–अव्रत री पहिचान।।

3. एक तत्त्व भी सही न जाणै, मिथ्यात्वी मतिमंद।
पहले गुणठाणे स्युं आगै, रो पथ होवै बंद।।

4. समकित रा अतिचार न जाणै, समकित रहै न स्वस्थ।
नन्दन मणिहारो समकित खो, कर्‌यो धर्म नै ध्वस्त।।

5. रग–रग में रम जावै समकित, मिले दूध मिष्ठान।
देव डिगाया नहीं डिगै बो, बढ़ती जावै शान।।

6. समकित जिणरै पास हुवै बो, ही आराधक होय।
''स्वस्तिक'' है संसार और, मुक्ति रा रस्ता दोय।।

(लय–भीखणजी चंवरी चढ्या....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢अणुव्रत≺

अणुव्रत को अपनाये।

अणुव्रत को अपनाकर जन जन, ज्योतिर्मय बन जाए।।ध्रुव।।

1. छोटे छोटे संकल्पों से, जीवन को महकाएं,
मानवीय मूल्यों से जीवन, शुद्ध प्रबुद्ध बनाएं।
नीतियुक्त पथ को अपनाकर, चिन्मय ज्योति जलाएं।।

2. वर्तमान में वैज्ञानिक ने, बहुत विकास किया है,
अणुशस्त्रों के द्वारा जग मे, भय को बढ़ा दिया है।
महाशक्ति है अणुव्रत जग में, शांति स्रोत फैलाए।।

3. आज अपेक्षा व्यक्ति व्यक्ति में, सद्संस्कार जगाएं,
प्रांत प्रांत में राष्ट्र राष्ट्र में, शांति मिशन पहुचाएं।
अणुव्रत पावन शांति निकेतन, मंत्र सतत् दोहराए।।

4. वर्ण जाति का भेद मिटाकर, गुण ग्राहक बन जाएं,
मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर से, मैत्री धार बहाएं।
सत्य, अहिंसा, करुणा द्वारा, **''स्वस्तिक''** नव्य रचाएं।।

(लय–संमयमय जीवन हो.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

''उपदेशक गीत''

➢धर्म≺

धर्म ही प्राण है मेरा, धर्म ही त्राण है मेरा
धर्म की शरण में तेरा, मिटेगा सर्व अंधेरा।।ध्रुव।।

1. धर्म प्यासे का पानी है, धर्म भूखे का भोजन है।
धर्म ही द्वीप शरणदाता, सुरक्षा का सघन घेरा।।

2. पतित को भी बना पावन, गिराते से बचाता है।
मातृवत धातृ बनता है, बड़ा सुन्दर है पग फेरा।।

3. धर्म बिकते कहीं देखा, नहीं मेरे नजर आया।
धर्म को बांटते फिरते, ये है मेरा ये है तेरा।।

4. जुड़ा है धर्म आत्मा से, उलझते पंथ में क्यों फिर
आत्मशुद्धि जहां होती, वहीं है धर्म का डेरा।।

5. सहजता सौम्यता भीतर, राग ना रोष हो तिलभर।
धर्म रग–रग में रम जाए, धर्म का है यही चेहरा।
धर्म आचरणों से प्यारे, धर्म का है यही चेहरा।।

(लय–मुझे है काम ईश्वर से..../मेरा दिल तोड़ने वाले...)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धर्म का सार यही, समझो सुज्ञ विचार।
धर्म का सार यही, समझो सब नर–नार।।ध्रुव।।

1. धर्म नहीं है मस्जिद मंदिर, गिरिजा गुरुद्वारे में मत फिर।
समता धर्म उदार।।

2. गंगा जमुना तीर्थ नहीं है, मन वश कर लो तीर्थ वहीं है।
राग विकार निवार।।

3. मुंह में राम बगल में छूरी, कट्टरवाद बढ़ाती दूरी।
द्वेष पाप का भार।।

4. बाल बढ़ाना मुंड मुंडाना, केशर चन्दन तिलक लगाना।
ये सब बाह्याचार।।

5. भूखा रहना प्यासा रहना, सर्दी सहना गर्मी सहना।
बिन भावों बेकार।।

6. इन्द्रिय मन का निग्रह करना, **"स्वस्तिक"** समाधिस्त हो रहना।
रहे शिष्ट व्यवहार।।

(लय–तोता उड़ जाना....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢कैसे आएंगे भगवान?≺

कैसे आएंगे भगवान–2।
अरेऽऽ.....द्वार तुम्हारे आ जाएं तो, होंगे नव फरमान।।ध्रुव।।

1. बुला रहा है घर में तेरे, अर्जी करता सांझ सवेरे।
अरेऽऽ.....पर कैसे आएंगे तेरे घट में कुड़ादान।।

2. बंदर की सी भरे कुचाले, मन में धब्बे काले काले।
अरेऽऽ...पैसों से तूं पुण्य कमाने करता झूठा दान।।

3. खुद को सच्चा भक्त बनाया, ए सी में प्रभु को बैठाया।
अरेऽऽ.....लेकर किससे किसको देता सोच जरा नादान।।

4. प्रभु समर्पण से ही मिलता, पानी से ही पौधा खिलता।
अरेऽऽ....जड़ का सिंचन ना होता जब सूखे सारे पान।।

5. नर भी हम नारायण भी है, भक्त भी भगवान भी है।
अरेऽऽ....प्रभु वही जो प्रभु बना दे सोच जरा इन्सान।।

(लय–स्वतन्त्र/प्रभु का जाप....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢प्रभु का जाप≺

प्रभु का जाप करो दिन–रात–2।
अरेऽऽ....होगा प्यारे फिर तो तेरा प्रभुवर से साक्षात्।।ध्रुव।।

1. भक्त बना मंदिर में जाता, तीर्थाटन भी करके आता।
अरेऽऽ....माया-जाप करेगा फिर तो नहीं बनेगी बात।।

2. माया कर छलता है पर को, नहीं निहारे अपने घर को।
अरेऽऽ.....सारे झंझट छोड़ आज से करो नई शुरूआत।।

3. खोज रहा तूं प्रभु को बाहर, नहीं मिलेगा कुछ चिन्तन कर।
अरेऽऽ.....भटक रहा क्यों इधर–उधर तूं, समय करे बरबाद।।

4. अरणी में ही छुपी आग है, पाता जिसके अहो भाग है।
अरेऽऽ.....अब ना हमें भटकना होगी अमृत की बरसात।।

5. भक्त बनो भगवान मिलेगा, रखो सरलता दीप जलेगा।
अरेऽऽ....अंधकार जब दूर हटेगा होगा नया प्रभात।।

(लय–स्वतन्त्र/कैसे आएंगे भगवान....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢मन➣

चंचल मन को वश में करना है हमें।
हो सघन पुरुषार्थ नहीं कायरता भरना है हमें।।ध्रुव।।

1. मन लोभी मन लालची है मन चंचल मन चोर है,
इधर उधर यह फिरता रहता नहीं ठिकाना ठोर है।
मन बन्दर से कभी न डरना है हमें।।

2. तृप्त नहीं होता है मानस ध्यान रखो चाहे जितना,
बकरा भूखा ही रह जाता उसे खिलाओ तुम कितना।
बुरे विचारों से उबरना है हमें।।

3. बड़ी समस्या मन नहीं लगता, जन–जन की आवाज है,
पर हम जरा समझ लें इसके पीछे भी क्या राज है।
गलत धारणा को बदलना है हमें।।

4. रुपयों पैसों में मन जाता स्थिरता वहां दिखाता है,
भौतिक संसाधन के पीछे कैसे दौड़ लगाता है।
कैसे स्थिरता वहां सोचना है हमें।।

5. जहां धर्म की बारी आती मन चंचल हो जाता है,
छोड़ वज्र हीरे को लोहे का ही भार उठाता है।
करे नियंत्रण यदि संवारना है हमें।।

6. ना भविष्य में ज्यादा जाना ना अतीत में जाना है,
वर्तमान में जीना हमको क्षण का लाभ उठाना है।
द्रष्टा भाव जगा बदलना है हमें।।

(लय–आने वाले कल.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➤उपकार➤

उऋण बनने उपकारी का उपकार चुकाओ रे।
कर्ज चुकाओ–कर्ज चुकाओ गुणी गुण गाओ रे।।ध्रुव।।

1. कहे नारियल सिर पर मेरे जटा भार ऋषिरूप,
मीठा–मीठा जल देता हूं सहकर गहरी धूप रे।
गुण मत बिसराओ रे।।

2. माता–पिता प्यार से पाल पोस करते हुंशियार,
आज्ञाकारी मन आराधक बनता श्रवण कुमार रे।
व्यवहार बताओ रे।।

3. गुरु ने ज्ञान दिया समझाया शम संयम व्रत धार,
पूज्य बनाया लाखों का यह कब उतरे आभार रे।
उपयोग लगाओ रे।।

4. सहयोगी बन किया सेठ ने शिशु बराक को सेठ,
काम पड़ा तब धन दौलत दे पुनः जमाई पेठ रे।
कर्त्तव्य निभाओ रे।।

5. माता–पिता, सेठ, गुरु को दो आध्यात्मिक सहयोग,
सम्यक् दर्शन ज्ञान क्रिया में चित्त समाधि का योग रे।
"स्वस्तिक" सुख पाओ रे।।

6. सामायिक तप–जप से होता आत्मा का उद्धार,
अभिभावक मालिक गुरु का हम सदा करे सत्कार रे।
उद्‌गार जताओ रे।।

(लय–म्हांरो हीरा जड़ियो....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢झूठ➢

झूठ मत बोल भाया झूठ मत बोल!
साची बात री ही कीमत हुवै अनमोल।।ध्रुव।।

1. घर कांई दुकानां में झूठ फैल्यो झूठ,
चारों ओर थारै झूठ फैल्यो देख आख्यां खोल।
ग्राहक आवै दुकानां में माल लेण ने,
कान काटे बीरो कर कर झूठो तोल–मोल।।

2. मालिक मजदूर और सेठ नौकर,
धोको देवै सब लोगां ने घुमावै गोल–गोल।
कालोधन जमाखोरी और तस्कर,
हाथा आयां पछै थांरी स्थिति बणै डावां–डोल।।

3. न्याय रो तराजू लैर जोम करै तूं,
लेवै छाने मानै घूंस पछै करे गंडा–गोल।
मिले शूली फांसी सारे उम्र री सजा,
कांपै थर थर जद थांरी खुल ज्यावै पोल।।

4. झूठ मत बोल आ ही सीख देवे,
फिर भी झूठ स्यूं ही राखे तूं सदा ही मेल–जोल।।
सेठजी रो हार मिल्यो सत्य रे प्रताप,
फुट्यो पाप रो घड़ो जद चौड़ी पट्टी–पोल।
"स्वस्तिक" सत्य स्यूं ही बढ़सी सदा ही तोल–मोल।।

(लय–घोर तपसी.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢जीवन विज्ञान≺

जीने की कला सिखाता, जीवन विज्ञान है।
बौद्धिकता के इस युग में, यह नव अभियान है।। ध्रुव।।

1. शिक्षा ने आज जगत् को, आगे बढ़ाया है।
स्पर्द्धा के पीछे मानव, खुद से अनजान है।।

2. एकांकी ज्ञान अधूरा, आए व्यवहार में।
प्रायोगिक शिक्षा द्वारा, ही नव निर्माण है।।

3. सद्संस्कारों से दूरी, है बढ़ती जा रही।
सद्गुण शिक्षा के द्वारा, महके उद्यान है।।

4. तन से मन से बुद्धि से, सुदृढ़ हमको बनना।
है मूल्य परक यह शिक्षा, करता आह्वान है।।

(लय–अफसाना लिख रही.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢शिविर≺

शिविर के द्वारा हरे, अज्ञान अंधेरा।
जगे सत्संस्कार टूटे, पाप का घेरा।।ध्रुव।।

1. क्या लिखोगे जिन्दगी के स्वच्छ कागज पर?
क्या भरोगे बहुत सुन्दर है स्वयं का घर?
बढ़े आगे सजग बनकर, जमाओ डेरा।।

2. धर्म और अधर्म की पहिचान हो पहले,
बने प्रामाणिक किसी भी व्यक्ति को न छले।
अनीति का कहीं भी ना, करें पग फेरा।।

3. विनय अनुशासन अनूठा धर्म है अपना,
चले उस पर निरन्तर परिपूर्ण हो सपना।
क्रिया ज्ञान मिले परस्पर, वही पथ मेरा।।

4. समर्पण श्रद्धा बढ़े, तब रंग आता है,
बिना सम्यक ज्ञान के, नर भटक जाता है।
सुनो सज्जन मिटाओ अब, जगत् का फेरा।।

(लय–मेरा जीवन कोरा.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢सहनशीलता≺

सहना जीवन में, बहुत कठिन है काम।
समता भर मन में, पाओगे आराम।।ध्रुव।।

1. जीवन की है एक कसौटी, सहनशीलता सद्गुण चोटी।
खुलते नव आयाम।।

2. सहनशील पृथ्वी होती है, कभी नहीं धीरज खोती है।
पूजे लोग तमाम।।

3. सहने से ही बड़ा बना है, सहने से ही घड़ा बना है।
देता यह पैगाम।।

4. है कबीर की सुंदर वाणी, मंत्री की है सीख सुहानी।
खुले सफलता धाम।।

5. शिक्षा देती अतुंकारी, कुरगडुक–सुलसा है भारी।
सब गाये गुणग्राम।।

6. सहन करोगे सफल बनोगे, आचरणों से विमल बनोगे।
"स्वस्तिक" ऊंचा नाम।।

(लय– तोता उड़ जाना.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢सामंजस्य➢

समझना जीने का विज्ञान,
सामंजस्य सीख ले करना, तभी बढ़ेगी शान।।ध्रुव।।

1. चिन्तन निर्णय करें साथ में, मिलकर रहना स्वयं हाथ में,
व्यर्थ न उलझे किसी बात में।
एक दूसरे के चिन्तन को, भी देना सम्मान।।

2. समझौता हम सीखे करना, शांत सुधारस घट में भरना,
बहे सदा समता का झरना।
जीवन शैली सीधी–सादी, से व्यक्तित्व महान।।

3. करें चेतना अपनी विकसित, जो चाहे अपना करना हित,
वाणी भी हो अपनी परिमित।
करे समन्वय की अनुप्रेक्षा, करना है उत्थान।।

4. मैत्री करुणा भाव जगाए, संशय वैर विरोध मिटाये,
"निज" "पर" जीवन सुखी बनाएं।
स्वार्थ छोड़ परमार्थ बढ़ाये, जीवन हो वरदान।।

(लय–निहारा तुमको कितनी बार.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢मीठी वाणी≺

मीठी–मीठी वाणी।
इसमें खर्च नहीं कुछ होता सुख की है सहनाणी।।ध्रुव।।

1. वशीकरण का मंत्र यही है, सिद्ध इसे कर देखो,
वचन रतन मिलते है मंहगे, व्यर्थ इसे मत फेंको।
करके निज हाथों से हानि, पछताता है प्राणी।।

2. मधुर–मधुर वाणी से मानव, सबको लगता प्यारा,
वरना प्यारे से भी प्यारा, बन जाता है खारा।
खारा पानी कौन चाहता, करता आनाकानी।।

3. मत बोलो बोलो तो मीठे, तोल तोलकर बोलो,
कटु कर्कश दिल घात करे मत, विष जीवन में घोलो।
शीतल वाणी से अगला भी, होगा पानी–पानी।।

4. कब? कैसे? कितना? किससे? सोचे बिन कभी न बोलो,
सीख हृदय में ग्रहण करो तुम, अपनी आंखे खोलो।
संयम और विवेक जगाकर, सफल करो जिंदगानी।।

(लय–संयममय जीवन हो....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢विनय≺

विनय धर्म अपनाएं।
मधुर मधुरतम हो व्यवहार सभी के दिल में छाएं।।ध्रुव।।

1. विनय मूल है जिनशासन में, प्रभुवर ने बतलाया,
मूल सिंचने से तरु फलता, तत्त्व यही मन भाया।
जीवन का कण–कण महकेगा, मृदुता को अपनाये।।

2. बाहुबली की तीव्र तपस्या, कितनी विस्मयकारी,
अहंकार वश ज्ञान न पाया, है यह बाधककारी।
जीने की है कला नम्रता, इसको नहीं भुलाये।।

3. फल–फूलों से लदा वृक्ष, नीचे ही सदा झुकेगा,
पानी भरा बादलों में वह, नीचे ही बरसेगा।
जीभ अन्त तक रहती है पर, दन्त नहीं टिक पाये।।

4. करें समादर रत्नाधिक का, नहीं भूलना इसको,
मंत्र याद यह रखना शिखरों, पर चढ़ना है जिसको।
"**स्वस्तिक**" सन्त खेतसी बनकर, नव इतिहास बनाये।।

(लय–संयममय जीवन.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢गाली≺

गाली मत देना, सुनलो कहता साफ।
गाली मत देना, बहुत बड़ा यह पाप।।ध्रुव।।

1. गाली देना कभी न अच्छा, बूढ़ा हो चाहे हो बच्चा।
इसके सभी खिलाफ।।

2. कोई दे तो उसको सुन ले, गुण सुमनों को उसमें चुन ले।
स्वयं रहो चुपचाप।।

3. देखोगे यदि पर की खामी, उससे बढ़ती है बदनामी।
उपजेगा संताप।।

4. लेना हो तो अच्छी चीजें, देना हो तो अच्छी चीजें।
पड़ती अच्छी छाप।।

5. क्षमा उसे दो जो दे गाली, छाएगी क्षण में खुशहाली।
शब्द बोलिये माप।।

(लय–तोता उड़ जाना....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢समन्वय≺

सूत्र समन्वय का है बड़ा सुहावना।
बढ़ती इससे घर समाज व्यक्ति की बड़ी प्रभावना।।ध्रुव।।

1. मिलकर के हम रहें साथ में, चिन्तन–मन्थन निर्णय हो,
नहीं दूसरों को हम पूछे, गलत धारणा यह क्षय हो।
सबके लिए करे मन से शुभ भावना।।

2. सुन्दर काम करें हम मिलकर एक साथ सब हाथ हो,
मजबूती आएगी इससे एक नई शुरूआत हो।
कठिन परिस्थितियों का करना सामना।।

3. नहीं अड़ेगे बातों में हम, नहीं कदाग्रह में उलझे,
देंगे हम सम्मान सभी को, उलझे धागे भी सुलझे।
मीठी वाणी की करनी शुभ साधना।।

4. फूट अहितकारी होता है पांच अंगुलियां समझाती,
किया समन्वय आपस में मन उपवन को वह महकाती।
मैत्री की करनी है हमें उपासना।।

(लय–आने वाले कल.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢संस्कार≺

संस्कारी बनना, सुखमय जीवन करना।
संस्कारी बनना, सद्गुण मोती भरना।।ध्रुव।।

1. संस्कारों से भरा खजाना, जो चाहो जीवन में पाना।
सद्गुण शिक्षा धरना।।

2. संस्कारों की कीमत आंके, अपने भीतर गहरा झांके।
करके लक्ष्य सुधरना।।

3. कुछ संस्कार सहज होते हैं, कुछ संगत से संजोते हैं।
कर अभ्यास उबरना।।

4. जहां जहां संस्कारी जाता, संस्कारों के पौध उगाता।
बहता निर्मल झरना।।

5. संस्कारी सुविनीत बने हम,**"स्वस्तिक"** परम पुनीत बने हम।
भव सागर को तरना।।

(लय–तोता उड़ जाना....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢बारहवां व्रत≺

भव से पार उतारे,।
द्वादश व्रत हितकर सुखकर है, सुन लो श्रावक सारे।।ध्रुव।।

1. मोती का व्यापार जरा सी, चूक करे बरबादी,
लाभ कमाता जागरूक दुःख, पाता है उन्मादी।
बड़े भाग्य से मिलता मौका, मिलकर लाभ उठा रे।।

2. चित्त वित्त सुपात्र योग, मिलता जब सुन्दर अवसर,
तीन योग जब मिलते है तब, सीरा बनता सुखकर।
दोष बंयालिस समझो परखो, जीवन सुखद बना रे।।

3. स्वयं विवेक जगाओ देखा–देखी कभी न करना,
झूठ कभी मत कहना पूछे, करना कभी न छलना।
माल गंवाना कर्म बांधना, समझ और समझा रे।।

4. जीर्ण, सुबाहु और रेंवती, कितने नाम बताये,
भावों पर ही टिकी योजना, चिन्तन स्वस्थ बनाये।
गफलत कभी न करना है यह, बात हृदय में धारे।।

(लय–संयममय जीवन हो.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢क्षण भंगुर दुनिया≺

क्या लेकर तूं आया बंदे क्या लेकर के जाना है।
खाली हाथों आया बंदे खाली हाथों जाना है।।ध्रुव।।

1. क्षणभंगुर सपनों की दुनिया फिर भी इसमें खोया है,
ज्ञानी है पर अज्ञानी बन मोह नींद में सोया है।
जागो–'जागो मानव अब तो समय नहीं फिर आना है।।

2. बड़े–बड़े तूं महल बनाता बड़े–बड़े बंगला गाड़ी,
शाश्वत क्या है इस दुनिया में धक धक करती है नाड़ी।
क्या जाने कब रुक जायेगी इसका कौन ठिकाना है।।

3. निकट निकट सब सगे संबंधी मित्र और परिवार जी,
सुख में आते बिना बुलाये रीति यही संसार की।
दुःख में साथी कोई नहीं है अन्त समय पछताना है।।

4. क्यों आसक्त बना इस तन पर नश्वर तेरी काया है,
फैली सारे जग में झूठी मोह ममता की माया है।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है सूत्र यही अपनाना है।।

5. साथ नहीं आया है कोई नहीं साथ में जायेगा,
भूल भूलैया में फंसकर तूं जीवन व्यर्थ गंवायेगा।
जिनवाणी अपनाले **"स्वस्तिक"** सच्चा सुख जो पाना है।।

(लय–बाजरे री रोटी....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢माटी री काया≺

क्षण क्षण बीत्यो जावै भाया, समय नहीं पाछो आसी
लाभ कमावै इण जीवन में, वो ही सच्चों सुख पासी ।। ध्रुव ।।

1. माटी री आ काया थांरी, माटी में मिल ज्यावेली,
रूप सम्पदा गर्व करे के? सूरज ज्यूं ढ़ल ज्यावेली।
किसे भरोसे बैठ्यो भोला, खड़ी सामने चौरासी।।

2. संभल संभल कर पगल्या धरज्यै सोच समझ चाली भाई,
चोटी पकड्या काल कह रह्यो, सागै बणकर परिछाई।
जीवन बरसाती रेलो है, किसे भरोसे इतरासी।।

3. घोर घटावां छाई बादल, हवा उड़ा ले ज्यावैला,
बो पछतावैला जो चिंतामणि स्युं काग उड़ावैला।
सांसां रे कच्चे धागे रो, माचो कब तक टिक पासी।।

4. नौ नौ दरवाजा खुल्या है, पहरेदार परायो है,
माथै ऊपर काल सारी, सेना लेकर आयो है।
"मुनि स्वस्तिक" जो सावधान है विजय ध्वजा बो लहरासी।।

(लय–चांदी की दीवार.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢काया का स्वरूप≺

रूप को देख क्यों रीझे, दिवाना मूर्ख परवाना?
बनी माटी की यह पुतली, इसे माटी में मिल जाना।।ध्रुव।।

1. लगे कमनीय ऊपर से, भरा कुत्छित पदार्थों से
देह से मोह न करना, तत्त्व है सत्य पहचाना।।

2. एक है रूप वस्त्रों का, चौगुना रूप गहनों का
अस्थि ढांचा इसे समझो, नहीं कुछ हाथ में आना।।

3. न तूं उसका न वह तेरी, जानकर भी तूं उलझा है
मोह बन्धन जरा तोड़ो, हमें भव पार है पाना।।

4. पिता–माता, भ्रात–भगिनी, सकल संसार मेरा है
व्यर्थ चिन्तन भूलकर भी, न सपने में हमें लाना।।

5. करे इन्द्रिय मन वश में, शांति ऊं शांति हो मन में
कहे **"स्वस्तिक"** न किंचित भी, राग का रंग दिखलाना।।

(लय–मेरा दिल तोड़ने.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢कर्मफल≺

जीवन धन्य बनाये।
कर्मों के बन्धन से बचकर, अप्रमत्त बन जाए।। ध्रुव।।

1. पुण्य–पाप है तेरे संचित, उसका स्वयं विधाता
भोगे तूं पछताये तूं ही, आगे कोई न आता
कर्मों की यह लीला देखो, कैसे नाच नचाए?।।

2. बड़े–बड़े राजा–महाराजा, सबको खूब घूमाता
कर्मों की यह मार गजब की, उनको भी तड़फाता
चक्री सनत् को देख देखकर, अन्तर्मन हिल जाए।।

3. महावीर के कर्म उदय में, आये भारी–भारी
कष्ट सामने आते उनको, सहते समता धारी
साधिक बारह वर्ष साधना, सबका दिल डोलाए।।

4. जब भी कर्म उदय में आए, समता रखो हमेशा
कर्मों के बन्धन से बचना, करें यत्न हम ऐसा
"मुनि स्वस्तिक" जिनवाणी को हम, पल–पल स्मृति में लाएं।।

(लय–संयममय जीवन.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢सफल जीवन➢

जीवन सफल बनाए।
आध्यात्मिक बनकर हम सुखकर, अंतर ज्योति जलाएं।। ध्रुव।।

1. क्षण क्षण बहता निर्मल पानी, अपवित्र क्यों करते?
कितने दिन जीना है जग में, विष घट क्यों भरते?
मैत्री ही अमृत धारा है, आपस में मिल जाए।।

2. राग–द्वेष में अटका–भटका, मन को ना समझाया,
मोह ममता में फंसकर अपना, जीवन व्यर्थ गंवाया।
वेद विकार हटाकर शुभ, योगों में चित्त जमाये।।

3. दुःख में साथी एक नहीं है, सुख में सब आ जाते,
स्वार्थी मानव नहीं किसी को, मतलब को अपनाते।
मैं ही मेरा मित्र शत्रु हूं, मन को यह समझाएं।।
'स्वस्तिक'' गुरु की सन्निधि ही हर, कण कण को विकसाये।।

(लय–संयममय जीवन.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢दुरंगी चाल≺

बड़ी दुरंगी चाल चाल विकराल बड़ा संसार है ।
पहन सिंह की खाल–खाल, निहाल बना संसार है।। ध्रुव।।

1. मन्दिर जाता हाथ जोड़ता, चरणों सीस झुकाता है,
दान दक्षिणा देता है तूं, यश भी खूब कमाता है,
झगड़ा घर का चल रहा वो, उसको नहीं मिटाता है।
छोड़ व्यर्थ धमाल–माल, विकराल.....।।

2. पाप साफ करने के खातिर, तीर्थाटन भी जाता है,
लिया नियम तूं पाल न पाता, झूठा ढोंग रचाता है,
घर भरने हित छोड़ धर्म को, क्यों तूं पाप कमाता हैं?
मत विषधर तूं पाल–पाल, विकराल.....।।

3. ब्रह्मज्ञान पाने के खातिर, शास्त्रों से घर भर डाले,
बिन चाबी के ताला लाया, कितने गुरुओं को पाले।
इधर–उधर की करता रहता,, क्यों न खुद को संभाले।
छोड़ मोह जंजाल–जाल, विकराल.....।।

4. भीतर का जो रोग मिटाये, सच्चा धर्म वही जानो,
सीधी सादी बातें **"स्वस्तिक"**, ज्ञानी जन से पहचानो,
ज्ञानामृत का प्याला पीलो, तत्त्व हृदय से तुम छानो।
तज माया तत्काल–काल, विकराल.....।।

(लय–चांदी की दीवार/कहे किशनोजी....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢अभिमान≺

मत कर तूं इतना अभिमान।
इस दुनिया में चन्द दिनों के, हैं सारे मेहमान।। ध्रुव।।

1. हा धन! हा धन! करता रहता, धन के पीछे दौड़ा,
धन के लिए प्रेम को तोड़ा, रहा समय अब थोड़ा।
धन के ढेर यहीं छूटेंगे, मत बन तूं नादान।।

2. खाना–पीना मौज उड़ाना, इसको ही सुख माने,
दौड़ धूप में जीवन बीते, कितने हो अनजाने।
कौन कमाता कौन भोगता? सोच जरा इन्सान।।

3. अच्छी करनी के अच्छे फल, जीवन को महकाओ,
दया धर्म का मूल हृदय में, इसको अब अपनाओ।
आसक्ति को क्षीण करें जो, करना हो उत्थान।।

(लय–धर्म की लौ.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢गुण ग्राहक➢

हम गुण ग्राहक बन जाए।
क्यों देखे अवगुण औरों के गुण चुन चुन अपनाए।। ध्रुव।।

1. पूर्ण कलाएं लेकर चंदा, देता शीतलता है,
क्यों कलंक देखे उसमें, अवगुण सबमें रहता है?
चंदे सी शीतलता लेकर, जग में सुयश कमाये।।

2. चन्दन की खुशबू फैली, सारे जग के मन भाए,
फूल नहीं होते चन्दन के, क्यों यह चिन्तन लाए?
चन्दन की खुशबू ले अपने, जीवन को महकाये।।

3. सागर है गंभीर धीर जल, अथक अनन्त समाया,
रत्नाकार माणक मणि–निधि पर, खारापन क्यों आया?
सागर से गं भीर बने हम, दर्शन ज्ञान बढ़ाएं।।

4. कोयल मीठी वाणी बोले, सुमधुर गाना गाये,
रंग कोयला सा काला फिर, भी जन मन को भाये।
विनयी मीठी–मीठी वाणी, हममें प्रियता लाये।।

5. पशु–पक्षी क्या देव–मनुज, सबमें गुण अमिट निहारे,
हर तिनका–तिनका औषधि बन, वैद्य सुविज्ञ विचारे।
"**मुनि स्वस्तिक**" हर अक्षर को, संयोजक मंत्र बनाये।।

(लय–जहां डाल–डाल पर सोने.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢आज और कल≺

बदलो भाई कलयुग आया, नष्ट हो रही मानवता।
खैर नहीं है यहां किसी की, जाग उठी है दानवता।। ध्रुव।।

1. मां–बापों के विनयी नन्दन, निशदिन करते थे सेवा,
अनुशासन में रहकर उनके, पाते शिक्षामृत मेवा।
अब सेवा करना बेटे–बहुओं, को मरना सा लगता।।

2. सुख–दुःख में साथी बनते थे, घर संस्था परिवार में,
फूट पड़ी घर–घर में देखो, लड़ते हैं बाजार में।
बदला वातावरण समूचा, पनप रही है पाश्विकता[1]।।

3. जनता की सेवा करने का, पहले प्रण लेता नेता
अंधा बांटे आज रेवड़ी, फिर फिर अपनों को देता
हेराफेरी चोर बाजारी, पनप रही है बरबरता[2]।।

4. नैतिकता अस्तांचल पहुंची, घोर अंधेरा फैला है
स्वार्थ प्रधान हुई दुनियां ये, दुर्मन मैला मैला है
न्याय कचेड़ी करे धांधली, धर्म नाम पर कट्टरता।।

5. आने वाली पीढ़ी का क्या, होगा जरा विचार करो?
पिकनिक होटल मौज मस्तियां, छोड़ो उठो सुधार करो
"मुनि स्वस्तिक" अब शक्ति जगाओ, हो जीवन की सार्थकता।।

(लय–चांदी की दीवार.....)

1. पशुता
2. क्रूरता

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢चेत्–चेतन्≺

चेत चेतन् ध्यान प्रभु का अब लगा।
काल ने जग में सभी को है ठगा।।ध्रुव।।

1. लग रही दुनियां ही मेरे साथ है।
मौत आती कौन फिर बनता सगा?।।

2. एक प्रभु का साथ तेरे काम का।
प्रीत कर प्रभु को बना ले तूं सखा।।

3. भक्ति करना विरक्ति के साथ में।
धर्म में सौदा कभी ना काम का।।

4. काल तेरे सामने आकर खड़ा।
नींद में सोया स्वयं को तो जगा।।

5. समय गफलत में बिताना ना हमें।
श्रम के बीजों से सफलता को उगा।।

(लय–दिल के अरमां.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢मानव तन≺

मानव तन पाया, सोच जरा इन्सान।
सोच जरा इन्सान–2, मानव.....।।ध्रुव।।

1. रत्नों की थैली है पाई, सहज रूप से हाथों आई।
दरिया में फैंके नादान।।

2. अनुभव से ही मिलता पानी, ज्ञानी जन की सुन्दर वाणी।
होना नहीं बेभान।।

3. अंजली दिन दिन होती खाली, नहीं करे इसकी रखवाली।
जागेगा जब छूटे प्राण।।

4. गफलत में मत समय गंवाओ, नर तन का कुछ लाभ उठाओ।
भाग्य बड़े बलवान।।

5. सहज सरलता में रम जाओ, शक्ति अनूठी उसे जगाओ।
कर लो जरा तुम ज्ञान।।

(लय–सिरियारी वाले करो नी करो...)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢जागृत होने का क्षण≺

क्षण क्षण यह बीत रहा क्यों इसे गंवाता है?
जागृत होकर के क्यों बेहोशी लाता है?।।ध्रुव।।

1. सुकृत करनी करने कल पर तूं टाल रहा,
दुष्कृत करनी करता कैसे तत्काल रहा।
टक टक घंटा बोले क्षण भर का नाता है।।

2. कल किसने है देखा कल आता कभी नहीं,
आये थे कितने ही वे चले गये हैं कहीं।
है समझदार वो ही जो लाभ उठाता है।।

3. आगे पीछे की क्यों तूं ज्यादा सोच रहा,
अवसर तुझको खोजे तूं अवसर खोज रहा।
क्षण वर्तमान का ही आगे बढ़ाता है।।

(लय–ना स्वर है ना संगम....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢अब तो जाग≺

अब जाग–जाग मानव, दिन बीतता ही जाता।
जो बीतता दिवस फिर, वह लौट के न आता।। ध्रुव।।

1. सूरज उगा सुबह जो, वह लौट सांझ जाता।
अंधेरी रजनी फिर है, क्यों सत्य को भुलाता।।

2. बचपन निकल रहा है, यौवन भी ढ़ल रहा है।
बन वृद्ध एक दिन फिर, नर अश्रु है बहाता।।

3. आया है हाथ खाली, जाना है हाथ खाली।
कर्मों का खेल जानों, यह नाच है नचाता।।

4. जल भरी अंजली जो, वह रिक्त हो रही है।
आयुष्य बीतता है, क्यूं व्यर्थ क्षण गंवाता।।

5. आ धर्म की शरण में, है प्राण त्राण तेरा।
हीरे सी जिन्दगी यह, **"स्वस्तिक"** तुझे बताता।।

(लय–इतिहास गा रहा है.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢सुखमय जीवन≺

सुखमय जीवन को पाना है हमें, तो सुन्दर स्वप्न सजाना है हमें
मंजिल ही मंजिल जाना है हमें, चिन्तन को स्वस्थ बनाना है हमें।।ध्रुव।।

1. अपनी गलती को ना स्वीकारते, दूजों पर ही कीचड़ उछालते।
पत्थर से सिर भिड़ाना ना हमें, पर से ना द्वेष बढ़ाना है हमें।।

2. कटु वचनों के जब चलते बाण है, होता महाभारत "औ" रामाण[1] है।
कष्टों से ना घबराना है हमें, समता से गम को खाना है हमें।।

3. आशाओं के सुन्दर पुल बांधता, पूरी करने को धागा सांधता।
सच्चाई ना भूलाना है हमें, छोड़ यहीं पर जाना है हमें।।

4. कीचड़ में पैर को क्यों डालता, मन में क्यों वासनाएं पालता।
बुरे संस्कार मिटाना है हमें, प्रभुवर से प्रीत लगाना है हमें।।

(लय–साजन मेरा उस पार.....)

1. बात का बतंगड़

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢स्वार्थी दुनियां≺

मानव तन पाया सुन्दर, कुछ लाभ उठाना है।
सोये को जागृत करना, यह लक्ष्य बनाना है।। ध्रुव।।

1. स्वार्थी है दुनियां सारी, स्वारथ को रोती है।
माया को पूछ रहे सब, यह भूल न जाना है।।

2. संबंध सारे झूठे, झूठा ऐश्वर्य है।
सब रंग फिके पड़ते, क्यों बना दिवाना है?।।

3. यह दृश्य विचित्र यहां के, तूं देखता प्यारे।
अवसर अनमोल पाया, मत चूक जाना है।।

4. तूं स्वयं उठेगा तब ही, देगा सहारा है।
राहगीर बनकर के आया, तूं खोज ठिकाना है।।

(लय–अफसाना लिख रही....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢राग–द्वेष≺

राग–द्वेष के झूले में क्यों झूलता?
जाग जाग रे मानव जागो, मिली बड़ी अनुकूलता।। ध्रुव।।

1. चौरासी में भटक रहा क्या, और भटकना चाहता?
जन्म मिला जगने के खातिर क्या तूं सोना चाहता?
पथ मिलता जो अपनी आंखें खोलता।।

2. खाते–पीते दिन यह बीते रह जाते हम रीते है
मौज–मस्तियां पिकनिक होटल मस्ती में ही जीते हैं
तन धन छोड़ यहीं जाना क्यों भूलता?

3. बचपन बीता यौवन बीता, मन में तूं हर्षाता है
विषय वासनाओं का कीचड़, इसमें पैर फंसाता है
सुखी वही जो क्षण क्षण को टंटोलता।।

4. कोई साथ नहीं आया है, नहीं साथ में जाएगा
पुण्य–पाप का खेल भयंकर सबको नाच नचाएगा
चाहोगे क्या जीवन में प्रतिकूलता?

(लय–आने वाले कल.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢रंगीन दुनियां≺

रंगीन दुनियां प्यारे, लगती बड़ी सुहानी ।
कुछ सोच को जगाओ, भ्रम में पड़ा है प्राणी।। ध्रुव।।

1. तुम कौन हो कहां से, क्या है तेरा ठिकाना?
खुद का पता नहीं है, ये है तेरी कहानी।।

2. परिकर समाज वैभव, सपनों की सारी माया।
पर व्यर्थ कल्पना में, दुनियां बनी दिवानी।।

3. है काल सिर पे तेरे, यह बात भूलता है।
पर काल याद रखता, कर चाहे आनाकानी।।

4. जिसको तूं माने अपना, सपना लगेगा आखिर।
बस चार दिन ही प्यारे, बीतेगी जिन्दगानी।।

(लय–अफसाना लिख रही हूं.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢भ्रष्टाचार≺

फैला भ्रष्टाचार है, कैसा अत्याचार है।
पैसों से बहरी दुनियां में, पैसों का व्यवहार है।। ध्रुव।।

1. काम यदि करवाना तुमको, पैसा लेकर आ जाओ,
बन जाएगा काम तुम्हारा, मन में मत चिन्तन लाओ।
पकड़ाओ तुम कार है, फिर तेरी सरकार है।।

2. चक्कर खाते रात–दिवस ना, चैन कभी मन में आता,
बस नोटों की गड्डी से ही, काम हमारा बन जाता।
पैसों की बौछार है, बस पैसों से प्यार है।।

3. पैसा ही ईमान बना है, पैसा ही भगवान है,
कोर्ट कचहरी में भी जाओ, पैसों का सम्मान है।
कैसा चमत्कार है, बना शिष्ट आचार है।।

4. पर सच्चाई छुप सकती क्या, क्यों करते हो नादानी?
धीरज का फल होता मीठा, सोच जरा मन में प्राणी।
बने शुद्ध आचार है, करना हमें विचार है।।
पैसों से बहरी दुनियां में, करना हमें प्रहार है।।

(लय–चलना आखिरकार.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢सत्संगत≺

सन्तों की संगत है पावन, खिल जाता जीवन का कण–कण।। ध्रुव।।

1. निर्मल, शीतल कल कल बहते, वे विविध परीषह को सहते।
प्यासे को तृप्ति मिले क्षण क्षण।।

2. दुर्गुण से दूर हटाते हैं, सद्गुण से प्रेम जगाते हैं
शिक्षाएं लगती मन भावन।।

3. संगत से भाग्य संवरता है, संगत से ज्ञान निखरता है।
सुरभित हो जाता मन उपवन।।

4. कुसंगत से बचता ज्ञानी, हंसा फंसता बन अज्ञानी।
तोते का सुन्दर है चिन्तन।।

5. क्षण भर की संगत कल्याणी, सन्तों की मंगलमय वाणी।
"स्वस्तिक" जागृत हो जन जन मन।।

(लय–सौभाग्य घड़ी जिनशासन की.....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢जैन संत≺

त्यागी संतों की महिमा, आओ मिलकर के गाएं।
जैनी संतों की चर्या, सुनलो हम तुम्हें बताएं।।ध्रुव।।

1. तेरह नियमों के पालक, छह काया के है रक्षक।
रत्नत्रयी आराधक, आत्मा में ध्यान लगाएं।।

2. घोर परीषह सहते, मस्तक का लूंचन करते।
धर्म ध्वजा भी रखते, मुंहपत्ती शान बढ़ाएं।।

3. संयम वस्त्रों का उनके, बिस्तर का काम न जिनके।
पद यात्रा नियम शुभंकर, परवशता नहीं सताए।।

4. कंचन को तजकर आए, ब्रह्मचारी शक्ति जगाएं।
दुर्गुण से दूर हटाते, अणगारी वे कहलाए।।

5. संतों के कोई न बन्धन, पूरा संसार परिजन।
सबके हितैषी सज्जन, मुक्ति का पथ दिखलाए।।

(लय–मंगल है आज तेरे....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢मां≺

कैसे भुलूं मैं उपकार, माता मेरी सद्गुण की भंडार,
अरे हां! देती है संस्कार, लुटाती सुत पर प्रेम अपार
करती हैं मीठी सी मनुहार, कैसे.....।।ध्रुव।।

1. लालन करती पालन करती, करती सार संभाल।
सुत के खातिर सर्दी गर्मी, सब सह देती प्यार।।

2. मृगनी भी लड़ने के खातिर, हो जाती तैयार।
बच्चे खातिर कुर्बानी यह, लेना जरा निहार।।

3. पूत सपूत अगर होता तो, आती नई बहार।
नौ महीने के नौ टके दे, क्यों करता तकरार?।।

4. माता खातिर रखो हृदय में, अपने उच्च विचार।
कर्त्तव्यों से कभी न हटना, हो मधुरिम व्यवहार।।

5. बेटा–बेटी, बहू सभी में, हो अच्छे संस्कार।
हो कृतज्ञता भाव सभी में, जुड़े तार से तार।।

(लय–भीखणजी चंवरी चढ्या....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

➢तीर्थ≺

आया आया रे, सुन्दर अवसर आया।
छाया छाया रे, हर्ष हृदय में छाया।। ध्रुव।।

1. गुरुवर के चरणों से बढ़कर कौन तीर्थ कहलाये।
विभुवर की अमृतमय वाणी, तृप्त हृदय कर पाये।।

2. बाहर के तीर्थाटन निमित्त, भीतर तीर्थ समाया।
वही तिरेगा जिसने सचमुच, ऊंचा लक्ष्य बनाया।।

3. तन हो मन हो शुद्ध वचन हो, भक्तिमय हो जीवन।
अर्पित हो जिनवचनों पर हम, मंगल होगा हर क्षण।।

4. शुद्ध विचार बने संस्कारित, मैत्री सह व्यवहारी।
गुरु वचनों पर गौर लगाये, यही तीर्थ हितकारी।।

(लय–पालय–पालय रे....)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनि स्वस्तिक जी का जीवन परिचय

जन्म : वि.सं. 2039, कार्तिक शुक्ला-2

जन्म-स्थान : मऊनाथ भंजन (यु.पी.)

मूल निवास : लाडनूं (राज.)

दीक्षा : वि.सं. 2058, आश्विन शुक्ला-10
बीदासर (राज.)

अग्रगण्य : वि.सं. 2070 माघ शुक्ला-7
गंगाशहर (राज.)

अध्ययन : हिन्दी, राजस्थानी, भोजपुरी एवं संस्कृत का सामान्य अध्ययन

यात्रा : राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र।

जैन विश्व भारती प्रकाशन
Books are available online at http://books.jvbharati.org

ISBN 978-81-939051-3-5

₹ 80

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org